# समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• अक्टूबर २०२० • वर्ष ७१ • अंक १०

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००


## महामानव की जयंती पर विनम्र-कृतज्ञ पुष्पांजलि!

जन्म:
०२ अक्टूबर
१८६९ ई.

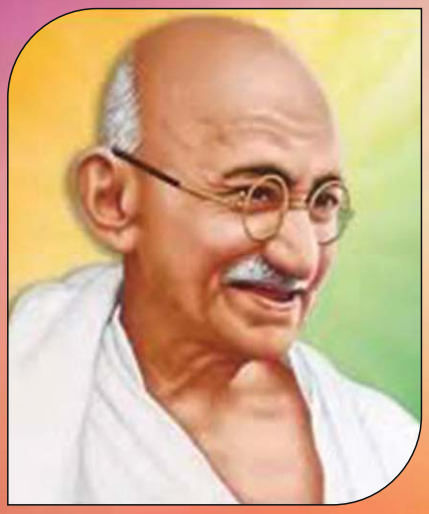

निधन:
३० जनवरी
१९४८ ई.

## इस अंक में –


- अध्यक्षीय: दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!
- सम्पादकीय: दीपावली: एक चिन्तन
- रपट: सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक
- सम्मेलन द्वारा वेबिनार का आयोजन
- सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत


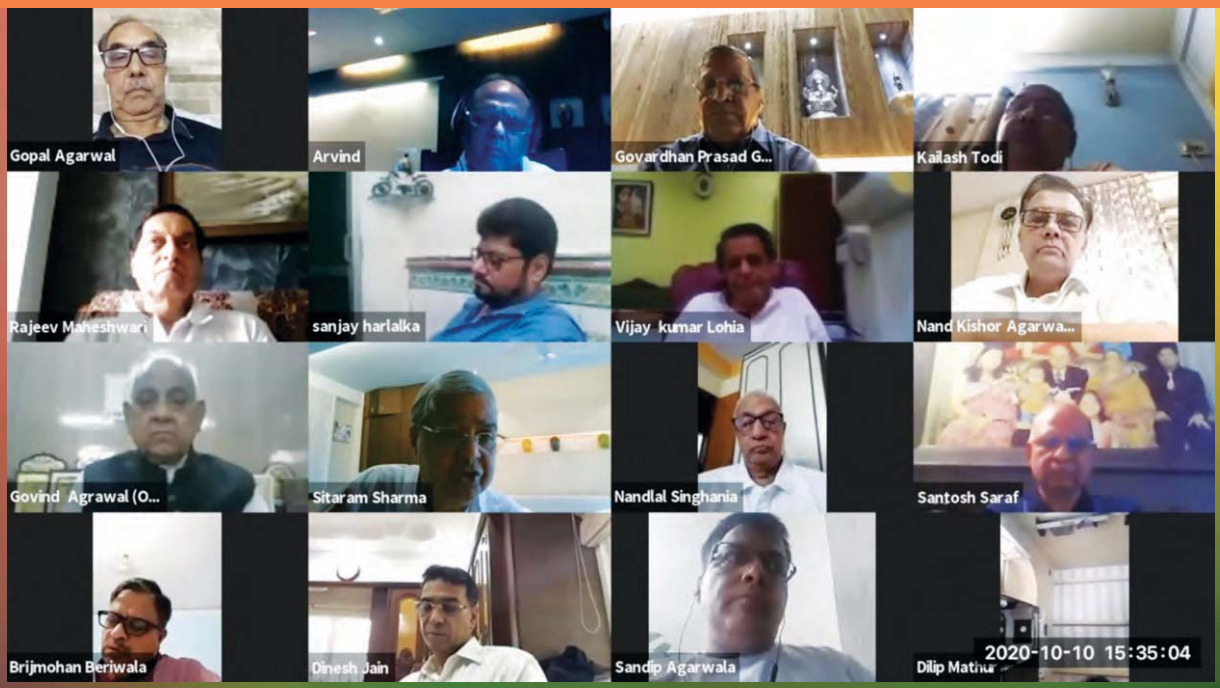


*१० अक्टूबर २०२०: अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित 'उद्यमशीलता की राह' विषयक वेबिनार में मुख्य वक्ता श्री अरविंद कजारिया के साथ परिलक्षित हैं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन गाड़ोदिया एवं अन्य केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारीगण।*

DOLLAR MAN | BIGBOSS

FIT HAI BOSS

SHUBH DEEPAWALI

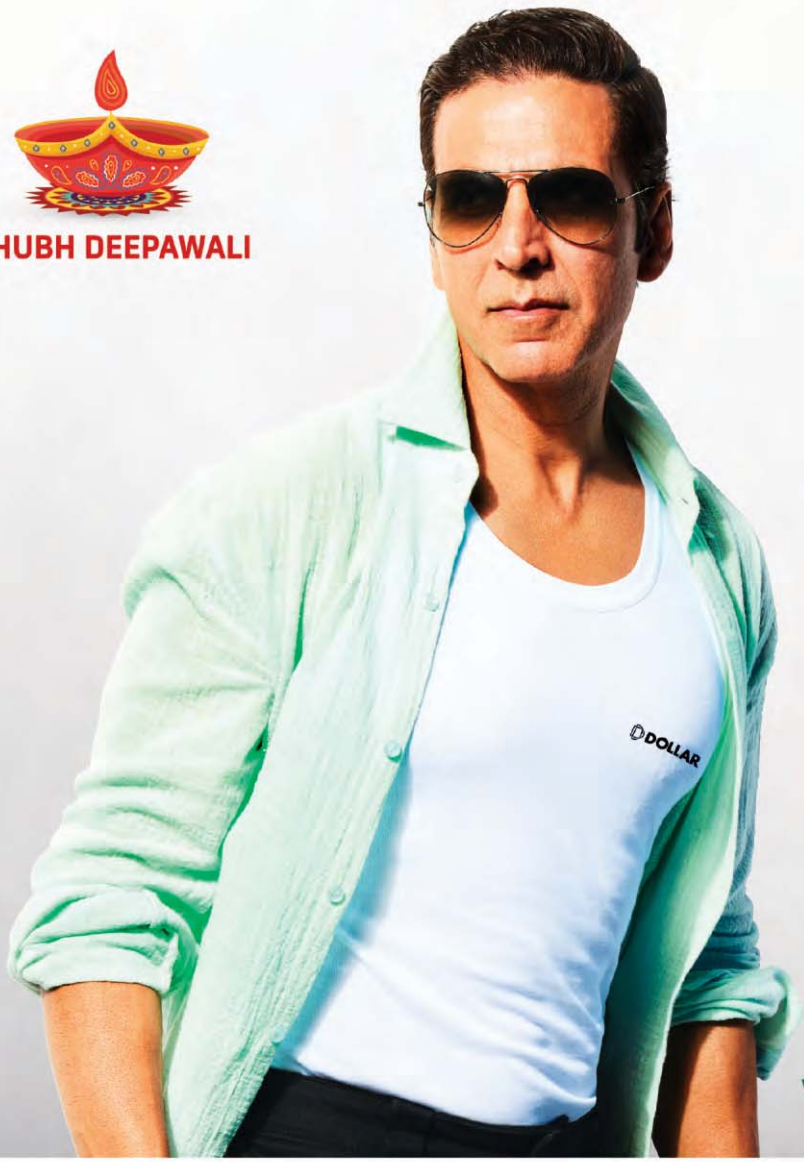


Also available with
VIRUS KILL LAYER

| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

# समाज विकास

◆ अक्तूबर २०२० ◆ वर्ष ७१ ◆ अंक १०
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

## अनुक्रमणिका


| शीर्षक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| ● **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया**<br>दीपावली : एक चिन्तन | ५ |
| ● **अध्यक्षीय : सन्तोष सराफ**<br>दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ! | ६ |
| ● **आलेख : गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया**<br>अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश है दशहरा! | ७ |
| ● **रपट –** | |
| सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक | ९-१० |
| वेबिनार : उद्यमशीलता की राह | ११ |
| ● **गांधी जयन्ती पर विशेष** | १४-२१ |
| ● **स्वास्थ्य ही धन है** | २२ |
| ● देव-स्तुति | २३ |
| ● सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत | २४-२६ |


**स्वत्वाधिकारी**

**अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन**
**All India Marwari Federation**

**प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय** : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
**फोन : ०३३-४००४ ४०८९**
पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

**◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया**

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

**कोरोना त्रासदी से बचाव हेतु, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समस्त समाजबंधुओं से सरकार द्वारा जारी मास्क, शारीरिक दूरी, स्वच्छता सहित सभी दिशा-निर्देशों के अनुपालन का आह्वान करता है!**

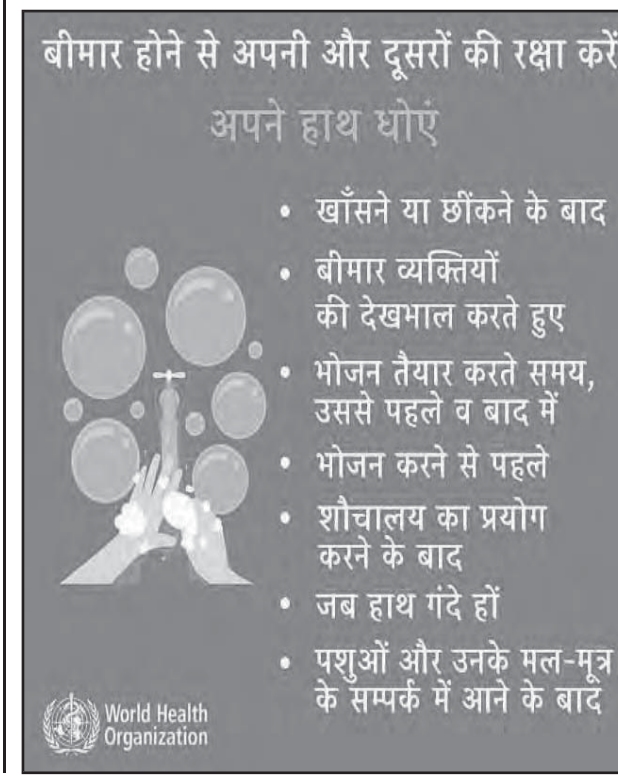

# MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

# उच्च शिक्षा कोष

**समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल**

विगत ८ वर्षों में देश के विभिन्न भागों के ८९ छात्र-छात्राओं को करीब १ करोड़ ७२ लाख रुपयों का दिया जा चुका है अनुदान

वर्तमान वित्तीय वर्ष (२०१८-१९) में अब तक करीब २७ लाख रुपयों का आवंटन

"Education is a fundamental human right and essential for excercise of all other rights."

पूर्व की भांति समाज के दाताओं का मिल रहा है तहेदिल से साथ, वर्तमान सत्र में श्री संदीप फोगला ने २५ लाख एवं श्री आनन्द कुमार अग्रवाल ने दिया ५ लाख का सहर्ष अनुदान

आप भी बढ़ाएं सहयोग का हाथ
**समाज के सर्वांगीण विकास में बनें भागीदार**

## छात्र/छात्राएँ नि:शुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, सिविल सर्विसेज, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : *चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

# दीपावली : एक चिन्तन

मान्यता है कि भगवान श्री राम १४ वर्षों के उपरांत जब अयोध्या आये, तब दिवाली मनाई गई। दीपावली के साथ और भी मिथक एवं प्रसंग जुड़ते चले गये। दीपावली की प्रासंगिकता तो बढ़ती गई पर इसके वास्तविक संदेश से हम दूर होते गये। आइये विचार करें, दिवाली हमें क्या संदेश देता है। दिवाली मनाने के लिये दशानन का वध आवश्यक है। दशानन - काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर, अहंकार, स्वार्थ, दुर्गति, मोह एवं नकारात्मकता किसी न किसी रूप में हमारे अंदर विद्यमान रहता है। इसका वध करने से अयोध्या का उदय होता है। अयोध्या जहाँ युद्ध न हो, द्वंद न हो, नकारात्मकता न हो। प्रतियोगिता की जगह सहयोगिता का भाव हो। मानव तन पाकर भी हम अभाव की मानसिकता में जीते हैं। तुलसीदासजी ने कहा है– **सुनहु तात यह अथक कहानी, समुझत बनई न जाई बखानी। ईश्वर अंश जीव अविनासी, चेतन अमल सहज सुखरासी।।**

यह समझते ही बनती है, कही नहीं जा सकती। जीव ईश्वर का अंश है। वह अविनाशी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से सुख की राशि है। यह भी कहा गया है– **बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद ग्रंथहि ही गावा।**

मानव शरीर बड़े भाग्य से प्राप्त होता है क्योंकि मानव शरीर प्राप्त करने के लिये देवता भी तरसते हैं। ये भगवान श्री राम के शब्द हैं। मानव को विलक्षण बुद्धि दी है, संवेदनाएँ दी है, इच्छाशक्ति दी है। उस पर बराबर कृपा बरसती है। उसे भगवान ने इतना कुछ दिया है। भगवान का वह दीया ही तो है। भगवान बुद्ध ने कहा – **अप्प दीपो भव**। खुद तो प्रकाशित हो ही, दूसरों के लिये भी प्रकाश स्तंभ की तरह जगमगाते रहो। जिसने जाना, वह पा गया। जिसने पाया वह बदल गया। मनुष्य माया के वशीभूत अपने आप को भूल गया। गोस्वामी जी कहते हैं – **सो मायावस भयऊ गोसाई। बध्यो कीर मरकट की नाई।** वह तोते और बानर की भाँति स्वतः ही माया से वँध गया। चेतन्यता को खोकर जड़ता को प्राप्त हो गया। **जब ते जीव भयउ संसारी, छूट न ग्रंथि होई सुखारी** मनुष्य संसारी बनकर सुख से दूर हो गया।

> गीता में बताये गये नरक के तीन द्वार – काम, क्रोध एवं लोभ के वशीभूत हम अभाव एवं असुरक्षा के संकुचित सोच से ग्रस्त रहते हैं।

> हमें कृतज्ञता, प्रचुरता, सहकारिता एवं मधुरता के भाव से जीवन को भरना है।

> हम देने वाले बनें, देना ही जीवन है। खुशियाँ नहीं मिली जब तक हम बटोरने में लगे रहे। अंत में पता चला कि खुशियाँ तो बाँटने से मिलती है। हमारे पास जो है, ध्यान हमारा उस पर रहे।

> दिवाली अंतर्मुखी होने का अवसर है। जीवन की दशा एवं दिशा का निर्धारण हमारे अंर्तनिहित ऊर्जा, विचार शक्ति एवं इच्छा शक्ति से होता है।

> हमारे चेतन्यता एवं दिव्यता का बोध ही हमारा वास्तविक ज्ञान है।

> हमारी सांसारिकता एवं जड़ता ही हमारा अज्ञान है। अज्ञान ही अंधकार है। अंधकार का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता।

> प्रकाश का अभाव ही अंधकार है। अंधकार में दैत्य ही प्रबल होते हैं। देव सुप्त रहते हैं। इस अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की यात्रा के लिये ही हमारे वेदों ने प्रार्थना किया है – **तमसो मा ज्योतिर्गमय**। ज्ञान के प्रकाश से हमारा जीवन जगमग जगमग हो जाय।

> अपने दिव्य सोच एवं स्वरूप से हम अनगिनत दीया प्रकाशित कर सकते हैं। नये, सकारात्मक सोच हमें ऊर्जा प्रदान करते हैं। जैसा हम सोचते हैं वैसा ही हम बन जाते हैं।

> बुझे हुए चेहरों में नये आशा एवं उत्साह का संचार ही दिवाली है। आपसी संबंधों में मधुरता एवं निखार ला सकते हैं।

> मीठे बोल एवं मधुर अहसास एवं संवेगों की मिठाई बाँट सकती है। रिश्तों पर गलतफहमियों की धूल पड़ी है, पुरानी यादों के दीवार खड़े है, उन्हें हटाना है। दूसरों में कमियाँ एवं त्रुटियाँ निकालने की जगह, स्वयं के उत्तरोत्तर बौद्धिक, आर्थिक एवं नैतिक विकास की प्रक्रिया में निरंतर संलग्न रहना है।

> दूसरे जो जैसे है, उन्हें वैसे ही स्वीकार करें। दिवाली के अवसर पर इससे अधिक मूल्यवान तोहफा हो नहीं सकता। दिवाली का संदेश है, अपनी दिव्यता को पहचानो। संसार में रहो, संसार को स्वयं के अंदर मत रखो।

> जो भी पास है, उसमें मौज लो, रोज लो, हर घड़ी लो। वर्तमान में जीवन यापन करो, जीवन उत्सव बन जायेगा। इस बार दिवाली आकर ठहर जायेगी। कहा भी गया है – **सदा दिवाली संत घर, आठो पहर त्यौहार**।

अध्यक्षीय

# दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

– सन्तोष सराफ

समाज विकास के पिछले अंक में मैंने सम्मेलन के कुछ कार्यक्रमों का उल्लेख किया था। वर्तमान संकट की घड़ी में सम्मेलन ने समाज के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी का ध्यान रखते हुए साधारणजनों के प्रति सहयोग का हाथ बढ़ाया है। यह हर्ष का विषय है कि अन्नपूर्णा की रसोई कार्यक्रम सफलता के साथ शहर में संचालित हो रहा है। इसके तहत समाज के प्रति सेवा-समर्पण का कार्य सम्पन्न हो रहा है। विभिन्न कार्यकर्ताओं का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। साधारण लोगों को सीधा-सीधा लाभ मिल रहा है।

कोरोना महामारी से जनसाधारण को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के तहत एक लाख से अधिक मास्क का निःशुल्क वितरण देश के विभिन्न स्थानों पर किया गया। मास्क वितरण के इस कार्यक्रम में प्रांतीय सम्मेलनों ने भी अपना-अपना सहयोग दिया। हालाँकि सात महीने बीत चुके हैं, संक्रमण की संख्या कम होने का नाम नहीं ले रहा है। देश की आर्थिक व्यवस्था को चलाने, रोजगार मुहैया कराने की बाध्यता के मद्देनजर गतिविधियाँ धीरे-धीरे बहाल हो रही है। इसका कोई विकल्प भी नहीं है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मत है कि महामारी की रोकथाम के लिये कुछ सावधानियाँ बरतने की आवश्यकता है। ये सावधानियाँ हैं – मास्क पहनना, शारीरिक दूरी बनाये रखना एवं साबुन या सेनिटाइजर से हाथ धोना। अनेक क्षेत्रों में देखा जा रहा है कि इन सावधानियों को दरकिनार किया जा रहा है। हाल ही में पश्चिम बंगाल में दुर्गापूजा के अवसर पर कोलकाता उच्च न्यायालय को दखल देना पड़ा। फलस्वरूप स्थिति बेकाबू नहीं हुई। हम अगर स्वतः ही इन तीन सावधानियों को अपने दैनंदिनी जीवन में अपनाएँ तो स्थिति धीरे-धीरे सुधरती जायेगी। मै सभी प्रांतीय सम्मेलन के पदाधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि इस विषय में विभिन्न माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम हाथ में लें। साथ ही साथ कोरोना पीड़ित लोगों को यथासंभव सहायता प्रदान करने में जो भी कदम उठा सकें, उठायें। समय की यह माँग है। यह तो हम सभी जानते हैं कि जल्द से जल्द इस संकट का भी अंत होगा। किन्तु जब तक नहीं होता है, हमें इस संकट की घड़ी में अपनी जिम्मेदारी निभाने को सहर्ष तत्पर रहना है।

इस माह राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित की गई। अस्वस्थता के कारण मैं इस बैठक में भाग नहीं ले सका। आर्थिक वर्ष २०१९-२० का वित्तीय लेखा-जोखा बैठक में प्रस्तुत की गई। अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस वर्ष उच्च शिक्षा कोष एवं सहयोग में उल्लेखनीय बढ़त हुई, यह उत्साहजनक है।

वर्तमान सत्र अपने समाप्ति की ओर है। वर्तमान सत्र में सम्मेलन की सदस्यता-वृद्धि एवं संगठन की मजबूती की दिशा में जो काम हुआ, वह सम्मेलन के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा। मुझे यह स्वीकार करने में कोई भी हिचक नहीं कि यह सब भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षों के मार्गदर्शन एवं वर्तमान राष्ट्रीय पदाधिकारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं हो पाता। मैं सभी प्रांतीय सम्मेलनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने सम्मेलन के कार्यक्रमों को गति प्रदान करने में महती भूमिका निभाई। विशेषकर सदस्यता अभियान में उत्कल, बिहार, झारखंड, पूर्वोत्तर एवं पश्चिम बंगाल का योगदान उल्लेखनीय रहा। राष्ट्रीय कार्यालय के कर्मचारियों का सहयोग मुझे सदैव प्राप्त हुआ।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि आगामी २१-२२ नवम्बर २०२० को झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में राँची में सम्मेलन का अगला अधिवेशन सम्पन्न होने जा रहा है। मैं नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया को अग्रिम बधाई प्रेषित करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उनके नेतृत्व में सम्मेलन नई उँचाइयाँ प्राप्त करेगा।

बंधुओं कुछ ही दिनों में हम दीपावली का पर्व मनायेंगे। पाँच दिनों का यह उत्सव एक महापर्व है। यह हमारा मुख्य पर्व भी है। मैं सभी समाजबंधुओं को दीपावली के अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि परिवार एवं समाज में शांति, उन्नति एवं सास्वास्थ्य का संचार हो। आपसी भाईचारे, प्रेम एवं सौहार्द में वृद्धि हो। वर्तमान संकट के दौर में सहकारी एवं न्यायालय के आदेशों का पालन करते हुए, उत्साह एवं मंगलकामनाओं के साथ इस पर्व का पालन करें। एक बार फिर दिवाली के अवसर पर आप सभी को आंतरिक मंगलकामनाएँ!

जय समाज, जय राष्ट्र!

# अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश है दशहरा!

– **गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया**
निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष

अक्तूबर माह में इस वर्ष पूरे देश में नवरात्रि एवं दशहरा का पर्व पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार महिषासुर नामक एक राक्षस था जिसने तीनों लोकों में हाहाकार मचा रखा था। माँ दुर्गा ने नौ दिनों तक उससे युद्ध किया और दसवें दिन महिषासुर का वध किया जिसके फलस्वरूप लोगों को उस राक्षस के अत्याचारों से मुक्ति मिल गई और चारों तरफ हर्ष का माहौल स्थापित हुआ, इस कारण इस दिन को दशहरा या विजयादशमी के रूप में मनाया जाने लगा।

दशहरा मनाने के पीछे एक कारण ये भी है कि इस दिन भगवान राम ने अत्याचारी रावण का वध किया था। अधर्म पर धर्म की, असत्य पर सत्य की जीत के इस त्यौहार को आज तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

दशहरा अथवा विजयादशमी भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए अथवा दुर्गा पूजा के रूप में, दोनों ही रूपों में यह शक्ति-पूजा, शस्त्र पूजन, हर्ष, उल्लास तथा विजय का पर्व है। दशहरा का पर्व दस प्रकार के पापों - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी जैसे अवगुणों को छोड़ने की प्रेरणा हमें देता है।

वर्तमान में यदि हम बात करें तो आज समाज इन्हीं अवगुणों एवं कुरीतियों से ग्रसित है। इनसे छुटकारा समाजहित में नितांत आवश्यक है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज में व्याप्त कुरीतियों के निवारण हेतु पिछले आठ दशकों से अधिक समय से सक्रिय रूप से कार्यरत है। सम्मेलन के दूरदर्शी पूर्वजगण अपने कुशल नेतृत्व में समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए सामाजिक कुरीतियों व आडम्बरों के निवारण में कार्यशील रहे। उनके प्रयासों के फलस्वरूप पर्दा-प्रथा, दहेज, बाल-विवाह आदि के विरोध एवं विधवा-विवाह, कन्याशिक्षा आदि के समर्थन में सम्मेलन ने उल्लेखनीय सफलताएँ प्राप्त की। समयांतर में समस्याएँ बदली हैं। आज समाज के समक्ष वैवाहिक समारोहों में मद्यपान, फिजूलखर्ची, प्री-वेडिंग शूटिंग, तलाक की बढ़ती प्रवृति, बुजुर्गों के प्रति घटता सम्मान, संस्कार-संस्कृति के प्रति उदासीनता, राजनैतिक सक्रियता की कमी आदि समस्याएँ हैं।

सम्मेलन इन कुरीतियों के निवारण हेतु निरंतर प्रयत्नशील है। अपने विभिन्न कार्यक्रमों एवं संगोष्ठियों के माध्यम से सम्मेलन समाज को अनवरत सतर्क एवं जागरूक करने का कार्य कर रहा है। इन प्रयासों के सुफल सम्मेलन को सफलताएँ भी प्राप्त हुई हैं। यह एक निरंतर प्रक्रिया है जो हमेशा जारी रहेगी।

इन सबके बीच कोरोना आज एक विश्वव्यापी संकट बनकर हमारे समक्ष चुनौतियाँ पेश कर रहा है। यह एक सामूहिक लड़ाई है जिसमें हम सबको साथ मिलकर, एक-दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ना है। कोरोना से प्रभावित समाज के संसाधनहीन वर्ग की सहायता हेतु सम्मेलन ने कोरोना राहत सेवाकार्य समिति का गठन किया है जिसके अन्तर्गत कोलकाता के विभिन्न स्थानों पर रोजाना ३०० लोगों को निःशुल्क भोजन वितरित किया जा रहा है। प्रांतीय सम्मेलनों से यह अपेक्षा है कि वे अपने स्तर से अपने-अपने प्रांत में इस प्रकार का सेवाकार्य प्रारंभ करें।

कोरोना से लड़ाई में हमें स्वयं भी सतर्क एवं जागरूक रहना होगा। जब तक इस वायरस का वैक्सीन नहीं आ जाता, हमें सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुचारु रूप से करना होगा। तभी हम खुद को तथा अपने परिवार को सुरक्षित रख सकेंगे। नियमित मास्क का इस्तेमाल, शारीरिक दूरी का पालन, लगातार अपने हाथों को साबुन से धोना, आदि के द्वारा हम खुद को इस वायरस से बचा सकते हैं।

मेरा आप सभी देशवासियों से, सम्मेलन के सभी समाजबंधुओं से, सभी केन्द्रीय-प्रांतीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों-सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि अपने-अपने स्तर पर अधिकाधिक लोगों को जागरूक करें एवं खुद भी इन एहतियातों का पालन करें। सुरक्षा ही बचाव है। त्यौहारों का सही आनंद स्वस्थ-सुरक्षित परिवार के साथ ही है। पुनः आप सबको नवरात्रि एवं दशहरा की ढेरों शुभकामनाएँ। माँ दुर्गा की कृपा हम सब पर बनी रहे, इन्हीं आशाओं के साथ.....

जय समाज, जय राष्ट्र!

**मायड़ भासा बोलता जिण नै आवै लाज**
**इसै कपूतां सूं दुखी आखौ देस-समाज**
**– पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया**

IISD Edu World
Be a Leader...

SREI Foundation

*"Educate Morally & Technically"* — Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100% Quality Education at most affordable fees

## Hospitality

## Hospitality Management & Culinary Arts

Newly Introduced

BTED – HND in Hospitality Management

awarded by EDEXCEL, UK (A Pearson Global Education Undertaking)

## Language School

- Functional English
- Spanish
- Russian
- Chinese
- French
- Hindi
- SANSKRIT
- Spoken English
- Italian
- German
- Persian
- Bahasa (Indonesia)
- Bengali

## Assistance for placement

- Complementary Spoken English
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- AC Classrooms
- P G Accommodation

### Centre for Administrative Services / WBCS

Course Director: Dr.Bikram Sarkar (IAS retd.)

- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)

## Health Care

Preparatory course for Joint Entrance of MD/MS, DNB and MRCP (Part-I) Medicine

"Family Medicine Certificate Course (First Aid)

## Business School

- AIMA recognized PGDM (2Yrs.)
- Tally ERP 9+GST
- Company Secretaryship
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance

## Skills

- Web Technology
- Certificate course on Theology
- Soft Skills
- Vocational & Technical Training
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Certificate Course on Computer Applications
- School Guide
- Bachelor Guide

# IISD EDU World

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in ● Website : www.iisdedu.in

18, Ballygunge Circular Road, Kolkata-700019
Website : www.iisdeduworld.com
Email : iisdedu@gmail.com
Ph : 46001626 / 27

# कोरोनाकाल में गरीबों की सहायता हेतु सम्मेलन करेगा हर सम्भव प्रयास : पवन गोयनका

**"पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में है और एक कठिन दौर से गुजर रहा है। दुविधा की बात है कि इसके सम्बंध में अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है। उद्योग-व्यापार और रोजगार की स्थिति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। मारवाड़ी सम्मेलन अपनी परम्परानुसार, समाज के संसाधनहीन लोगों की सहायता हेतु प्रत्येक स्तर पर कदम उठा रहा है। संकट की इस घड़ी में लोगों के जीवन में कुछ सकारात्मक बदलाव भी आये हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए कि इन बदलावों को अपने दिनचर्या का अंग बनाये रखें।"** ये वक्तव्य है अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री पवन कुमार गोयनका** के जो उन्होंने गत २७ अक्तूबर २०२० को सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। बैठक का आयोजन वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से श्री गोयनका के सभापतित्व में किया गया।

श्री गोयनका ने बताया कि पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा के चेयरमैनशिप में गठित कोरोना राहत सेवाकार्य समिति के तहत दो महत्वपूर्ण प्रकल्प हाथ में लिए गये हैं। इसके अन्तर्गत केन्द्रीय सम्मेलन द्वारा प्रदत्त मास्क प्रादेशिक शाखाओं के माध्यम से पूरे देश में निःशुल्क वितरित किए जा रहे हैं। अभी तक लगभग एक लाख मास्क का वितरण किया जा चुका है। इसके अलावा '**मारवाड़ी सम्मेलन भोजनालय**' कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है जिसके अन्तर्गत कोलकाता के अलग-अलग स्थानों पर रोजाना ३०० संसाधनहीन गरीब लोगों को निःशुल्क भोजन वितरित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम अन्य स्थानों पर भी प्रारम्भ करने की योजना है।

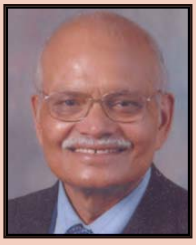

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री हरिप्रसाद कानोड़िया** ने कोरोनाकाल में सम्मेलन के सेवाकार्यों को संतोषजनक बताते हुए कहा कि समाज के वंचित तबकों की चिकित्सा सहायता हेतु एक प्रकल्प की स्थापना हमारी प्राथमिकताओं में है।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला** ने समिति की पिछली बैठक (११ जुलाई २०२०, वीडियो माध्यम द्वारा राष्ट्रीय स्थायी समिति की बैठक के साथ संयुक्त रूप से

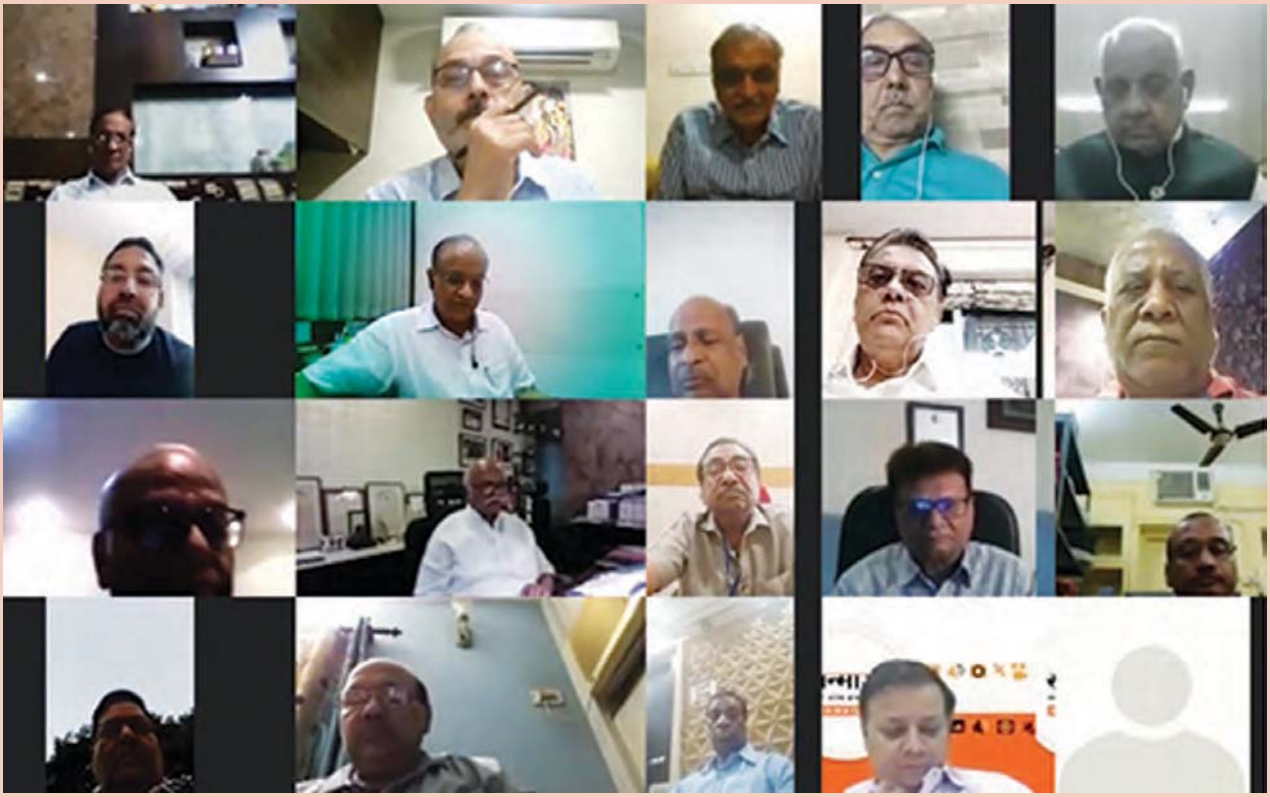

आयोजित) का कार्यवृत प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। उन्होंने **'महामंत्री की रपट'** और वर्तमान सत्र में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा लिए गये निर्णयों पर **'कार्यवाही की रपट'** भी प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि मौजूदा सत्र की मुख्य विशेषता रही समाजसेवा जिसे हम भविष्य में भी जारी रखेंगे। श्री झुनझुनवाला ने बताया कि सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी ११ नवम्बर २०२० को जूम एप्प के माध्यम से आयोजित करने की योजना है, समिति ने इसे स्वीकृति दी।

बैठक में सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री कैलाशपति तोदी** ने लेखा परीक्षक द्वारा जाँचे गये वित्तीय वर्ष २०१९-२० के आय-व्यय का लेखा-जोखा तथा संतुलन पत्र प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पास हुआ। श्री तोदी ने सम्मेलन की आर्थिक स्थिति, कोष, समाज विकास के खर्च एवं विज्ञापन, अनुदान-प्राप्ति आदि के विषय में संक्षेप में बताया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री अनिल कुमार जाजोदिया** ने कहा कि पिछले ६ महीने का दौर सीखने का रहा। हमें यह भी देखना होगा कि हमने क्या सीखा। **संकट के समय मंदिरों में भीड़ और सामाजिक संस्थाओं की जिम्मेदारी बढ़ जाती है।** हम ऐसे कार्यक्रम तैयार करें जिससे समाज के हर वर्ग, हर घर तक पहुँच सकें।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विवेक गुप्त** ने कहा कि सम्मेलन का हर सत्र उपलब्धियों भरा रहा है। हर सत्र में पिछले सत्र के मुकाबले बढ़-चढ़कर काम हुआ है। मौजूदा सत्र में भी सबने अपना श्रेष्ठ योगदान दिया है। उन्होंने सम्मेलन के सेवाकार्यों के प्रचार-प्रसार हेतु एक टीम गठित करने का विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया के इस्तेमाल तथा विभिन्न समाचार चैनलों से सम्पर्क स्थापित कर इस कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है।

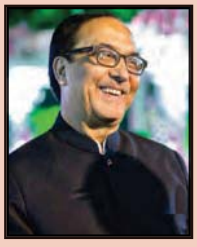

राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री गोपाल अग्रवाल** ने सबके सहयोग हेतु अपना आभार प्रकट करते हुए कहा कि आप सबके सहयोग से सम्मेलन ने मौजूदा सत्र में संगठन-विस्तार में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

वित्तीय उपसमिति के चेयरमैन **श्री आत्माराम सोंथलिया** ने अधिकाधिक समाजबंधुओं से विज्ञापनरूपी सहयोग एवं वित्तीय सहयोग की बात कही। उन्होंने कहा कि सबके सहयोग से ही सम्मेलन समाजहित में अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने कोरोनाकाल में सम्मेलन के सेवाकार्यों को उत्कृष्ट बताते हुए कहा कि स्वामी विवेकानन्दजी ने कहा था कि भूखे को भगवान की बात बताने की जगह उसको रोटी देने की आवश्यकता है।

दक्षिण भारत में सम्मेलन के संगठन-प्रभारी **श्री बसंत मित्तल** ने कहा कि संगठन-विस्तार में सम्मेलन के पास अपार सम्भावनाएँ हैं। दक्षिण भारत के अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि लोगों में सम्मेलन के प्रति उत्साह है और वे सम्मेलन से जुड़ने को उत्सुक हैं।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नंदकिशोर अग्रवाल** ने कोरोना राहत सेवाकार्य समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों को प्रशंसनीय बताया। उन्होंने कहा कि मौजूदा सत्र में, संगठन-विस्तार में केन्द्रीय सम्मेलन का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप पश्चिम बंग सम्मेलन ने प्रदेश में अपनी शाखाओं के गठन एवं संगठन-विस्तार में उल्लेखनीय सफलता पाई।

उत्कल सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री गोविंद अग्रवाल** ने प्रदेश में चल रहे सेवाकार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि कोरोनाकाल में, संक्रमितों की उपचार में सहायता हेतु ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा, बड़े पैमाने पर मास्क का वितरण भी किया गया है।

रोजगार सहायता उपसमिति के चेयरमैन **श्री दिनेश जैन**, प्रादेशिक अध्यक्षों सर्वश्री **लक्ष्मीपत भूतोड़िया** (दिल्ली), **डॉ. सुभाष अग्रवाल** (कर्नाटक), **श्याम सुन्दर अग्रवाल** (केरल) के अलावा सर्वश्री **योगेश तुलस्यान**, **विजय कुमार अग्रवाल** एवं **राज कुमार केडिया** ने भी अपने संक्षिप्त वक्तव्य रखे।

धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री **श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका** ने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ के जल्द स्वास्थ्य-लाभ की कामना की। बैठक में सर्वश्री **बिनोद तोदी, पवन सुरेका, अशोक केडिया, पवन जालान, बी.डी. अग्रवाल, पवन पोद्दार, दिनेश अग्रवाल** सहित सम्मेलन के राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक पदाधिकारियों एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

# ग्राहक की सेवा एवं संतुष्टि ही व्यवसाय का मूलमंत्र : अरविंद कजारिया

**"कभी ना हार मानने की अपनी प्रवृत्ति की वजह से मारवाड़ी हमेशा से ही व्यापार-उद्योग के क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। कुछ कर गुजरने की भूख, काम के प्रति जुनून और अपनी मेहनत के बलबूते लक्ष्य प्राप्ति का जज्बा – ये वो गुण हैं जिन पर अमल करके आप हमेशा सफलता प्राप्त कर सकते हैं।"** ये विचार हैं

इन्ट्रासॉफ्ट टेक्नोलॉजीज के संस्थापक और सुप्रसिद्ध प्रबंधन गुरु **श्री अरविंद कजारिया** के जो उन्होंने गत १० अक्तूबर २०२० को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित '**उद्यमशीलता की राह**' विषयक वेबिनार में व्यक्त किये।

वेबिनार का सभापतित्व करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने सभी उपस्थितों का स्वागत किया एवं सम्मेलन की पृष्ठभूमि के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी अपने उद्योग-व्यवसाय के लिए कहीं भी जाने से हिचकिचाते नहीं हैं। मारवाड़ियों की प्रवृत्ति के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि मारवाड़ी देश व दुनिया के जिस भी हिस्से में गये, वहाँ की सभ्यता व संस्कृति में रच-बस गये और वहाँ के विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

अपने सम्बोधन में सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि मारवाड़ी जन्म से ही उद्यमी होते हैं। वाणिज्य-व्यापार उनके खून में होता है। उन्होंने कहा कि बदलते परिदृश्य में, विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार के नये अवसर उपलब्ध हुए हैं। उन अवसरों को पहचान कर, नयी तकनीकों का प्रयोग करते हुए उनका लाभ उठाना आज समय की माँग है।

सेमीनार उपसमिति के संयोजक **श्री दिनेश जैन** ने श्री अरविंद कजारिया का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि श्री कजारिया पिछले पच्चीस वर्षों से व्यवसाय-प्रबंधन से जुड़े हुए हैं।

श्री कजारिया ने बताया कि ग्राहकों की मानसिकता में अब काफी बदलाव आया है। नयी तकनीकों ने ग्राहकों को कई विकल्प प्रदान किये हैं। व्यापारियों को भी बदलते समय के साथ खुद को बदलना होगा और अपने व्यवसाय में ग्राहक की जरूरत के अनुरूप बदलाव लाने होंगे। उन्होंने व्यवसाय में सफलता हेतु निम्न सुझाव दिये –

- सफल व्यक्तित्व को पढ़ें, उनके बारे में जानें। अपने जीवन में उन्होंने किन उतार-चढ़ाव का सामना किया एवं कैसे उससे बाहर निकले, इसका अध्ययन करें।
- हमेशा विचार करें, ग्राहक आपके पास क्यों आये? आपके उत्पाद में ऐसी क्या खासियत है? एक ग्राहक के तौर पर क्या आप अपने उत्पाद से खुश हैं?
- हमेशा अपने सकारात्मक पक्ष का इस्तेमाल करें। सकारात्मक सोच रखें।
- खुद पर एवं अपने व्यवसाय पर भरोसा रखें। अपने उत्पाद के प्रति जागरूक रहें। समय के साथ, उसमें सुधार करते रहें।

वेबिनार के दौरान कई प्रतिभागियों ने विषय से संबंधित अपने सवाल एवं शंकाएँ भी व्यक्त किये जिनका निवारण श्री कजारिया ने उदाहरणों के जरिये किया।

धन्यवाद-ज्ञापन सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री कैलाशपति तोदी** ने किया। उन्होंने श्री कजारिया एवं सभी उपस्थितों का आभार व्यक्त किया। वेबिनार में निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया**, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री अनिल कुमार जाजोदिया**, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री **श्री संजय हरलालका**, राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री गोपाल अग्रवाल**, प्रादेशिक अध्यक्षों **श्री नंदकिशोर अग्रवाल** (प. बंग), **श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया** (दिल्ली) एवं **श्री गोविंद अग्रवाल** (उत्कल), पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया**, दक्षिण भारत में सम्मेलन के संगठन प्रभारी **श्री बसंत मित्तल**, राजनैतिक चेतना उपसमिति के चेयरमैन **श्री नंदलाल सिंघानिया** सहित देश भर से सम्मेलन के पदाधिकारियों तथा सदस्यों ने हिस्सा लिया।

# सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

विवेकानंद पार्क, मुरारीपुकुर : ०१ अक्तूबर २०२०

एस.एन. बनर्जी रोड (कोलकाता कॉर्पोरेशन) : ०२-३१ अक्तूबर २०२०

कादापाड़ा, काकुड़गाछी : ०४-०५ अक्तूबर २०२०

# सम्मेलन के कोरोना राहत सेवाकार्य के अन्तर्गत निःशुल्क भोजन वितरण

लिलुआ, हावड़ा : ०९ अक्तूबर २०२०

१७ अक्तूबर २०२० को बजरंगबली मंदिर, हावड़ा के निकट निःशुल्क भोजन वितरण

बेलूर : १८ अक्तूबर २०२०

# गांधीमार्ग : तत्व और महत्व

**– सुशोभित शक्तावत**

गांधी होना कठिन है, गांधीवादी होना सरल है। अलबत्ता जिस दिशा में सामूहिक अवचेतन इन दिनों प्रवृत हो रहा है, उसमें तो गांधीवादी होना भी इतना सहज नहीं। गांधीवादी यानी क्या? बड़ी सरल सी बातें है, उसमें कुछ दुरूह नहीं है।

सत्यनिष्ठा, इसलिए नहीं कि नैतिक शिक्षा की पुस्तक में उसका उपदेश दिया गया है, बल्कि इसलिए कि झूठा से झूठा आदमी भी अपने अंतःकरण से झूठ नहीं बोल सकता। तब मन में दुराव रखने से क्या लाभ? अहिंसा, इसलिए नहीं कि हिंसा पाप है, बल्कि इसलिए कि जो व्यक्ति हिंसक होता है, उसकी चेतना में ग्रंथियां बन जाती है, वह विरूप हो जाता है। मितव्ययिता, इसलिए नहीं कि साधनों का अभाव है, बल्कि इसलिए कि परिग्रह के एक छोर पर लोभ है, दूसरे छोर पर तृष्णा, और तीसरे कोण पर अन्याय और ये सभी मन को भरमाते हैं। उसे असम्भव मरीचिकाओं के लिए व्यग्र करते हैं।

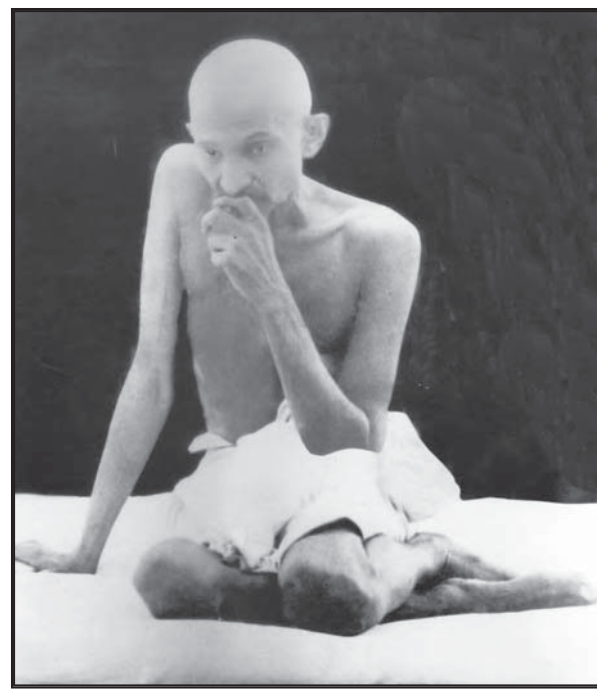

सरलता, इसलिए नहीं कि वैसा करने से पुण्य मिलेगा, बल्कि इसलिए कि जीवन अपने स्वरूप में सरल ही है, प्रकृति के नियम अकुंठ ही हैं। आप उसके विपरीत जाकर स्वयं को अवरुद्ध ही करेंगे। दैन्य, इसलिए कि संसार में मनुष्य दीन ही है, लघु ही है, वैसा ही वह स्वयं को जान ले तो निर्मल हो जाए। जीजस ने इसीलिए कहा था – 'धन्य हैं वे, जो अपनी आत्मा में निर्धन हैं।' फिर, इसी में जोड़ लीजिए सादगी, विनम्रता, निसर्ग से अनुकूलता, परिश्रम, निष्ठा, ईमानदारी, पारदर्शिता, परदुःख कातरता, समाज के अंतिम व्यक्ति का चिंतन यानी सर्वोदय सत्याग्रह, आत्म-परिष्कार, ये सब गांधीवादी मूल्य हैं।

जरूरी नहीं कि आप इंद्रिय निग्रह करें ही तभी गांधीवादी कहलाएँगे। नेहरू भी गांधी के शिष्य थे, विनोबा भी थे। ये दोनों ही दो विपरीत ध्रुव। जरूरी नहीं कि आप व्रत, उपवास एवं तप करें ही। आपदधर्म में भी शस्त्र न उठाएँ। भगत सिंह भी गांधीजी की जय बोलते थे और नेताजी सुभाष भी राष्ट्रपिता की चरणधूलि लेते थे। आहार-संयम और इंद्रिय-निग्रह गांधीजी की निजी यात्रा के प्रयोग थे, वो आप पर भी लागू हों, जरूरी नहीं। 'सत्य के प्रयोग' की भूमिका में गांधीजी ने कहा भी था – 'मेरे लेखों को प्रमाणभूत ना मानें, उनमें बताए प्रयोगों को दृष्टांतरूप मानकर अपने-अपने प्रयोग यथाशक्ति और यथामति करें।'

आप इन मूल्यों में निष्ठा रखें तो गांधीवादी कहलाएँगे। जो लोग गांधीजी को गाली बकते हैं, वो इन मूल्यों को गाली बके बिना वैसा नहीं कर सकते। क्योंकि गांधीजी ने ये बातें केवल कही नही थीं, वे इनकी सजीव प्रतिमा बन गए थे। मनसा-वाचा-कर्मणा। 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' जो गांधीजी को अपशब्द कहता है, वह सत्यनिष्ठा को अपशब्द कहता है। जो गांधीजी से द्वेष रखता है, वह निर्मलता की लक्ष्मणरेखा लाँघने के बाद ही वैसा करता है। वो इस सम्भावना को झुठला देता है कि मनुष्य की चेतना का कभी उन्नयन भी हो सकता है। अपने भीतर की मनुष्यता की हत्या किए बिना महात्मा गांधी की हत्या नहीं की जा सकती।

गांधी निकष हैं। गांधी मानदंड हैं। गांधी न्याय की

तुला हैं। इसलिए मैं कहता हूँ गांधीवादी होना सरल है, गांधी होना कठिन है। कठिन क्यों है? क्योंकि प्रेरणा के किसी क्षण में हम सभी सत्यनिष्ठ, अहिंसक, सरल, पारदर्शी हो जाते हैं, किंतु आधी सदी के सार्वजनिक जीवन में वैसा बने रहना एक असम्भव तपस्या है। उसे गांधीजी ने साकार किया था। आश्चर्य होता है कि कैसी निष्कलुष चेतना रही होगी, जो इतने झंझावातों के बावजूद डिगी नहीं। ना कभी झूठ बोला, ना कभी हिंसा का मार्ग सुझाया, छले जाकर भी मन में द्वेष नहीं आने दिया, धोखा खाकर भी भरोसा नहीं गँवाया, गाली सुनकर भी मन में क्रोध नहीं जगा, अपमानित होने की भावना नहीं आई, आत्मा में कुछ अवरुद्ध नहीं हुआ। उलटे उन्होंने यही सोचा कि मुझमें ही कोई दोष रहा होगा, जो मेरा नेतृत्व भारतवासियों का उन्नयन नहीं कर सका है। मुझमें ही अभाव होगा।

हत्या से सत्रह दिन पूर्व गांधीजी ने उपवास किया तो प्रार्थना सभा में संदेश भिजवाया – 'कोई भी इंसान अपनी जान से ज्यादा पवित्र चीज कुर्बान नहीं कर सकता। मैं आशा करता हूँ मुझमें इस उपवास के योग्य पवित्रता होगी।' गांधीजी ने वस्तुतः स्वयं को मृत्यु को प्रस्तुत कर दिया था। उनकी हत्या ने समूचे राष्ट्र को ग्लानि, लज्जा और आत्मबोध से भर दिया। सामूहिक अवचेतन प्रशांत हो गया और मनन में डूब गया। स्वाधीनता आंदोलन गांधीजी के लिए एक यज्ञ की तरह था, दधीचि को उसके लिए अपनी अस्थियाँ देनी ही थीं।

वो गाना है ना 'आँधी में भी जलती रही गांधी तेरी मशाल...साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल...' यह सच है। इतने अंधड़ों के बीच स्थितप्रज्ञ बने रहना सरल नहीं। गांधी होना कठिन है। मैं तो स्वयं को गांधीवादी नहीं कहता, मैं अभी उस उपाधि के योग्य नहीं। मुझमें तो राग-द्वेष, अभिमान, गौरव भरा है। कोई आकर कुछ कह दे तो बुरा मान जाता हूँ। कोई अच्छा कह दे तो मन में फूल खिल जाते हैं। इसने मुझे भला कहा, यह मेरा मित्र। इसने मुझे बुरा कहा, यह मेरा शत्रु, इससे मुझे प्रतिशोध लेना है। राग-द्वेष की भावना आ जाती है। इनका परीक्षण करता हूँ, किंतु शमन नहीं कर पाता। मैं अभी गांधीवादी कहाँ।

मदनलाल पाहवा के वारे में भी उन्होंने कहा था कि उस भाई से आपको घृणा नहीं करना चाहिए। ईश्वर उसका भला करे। पुलिस से मैंने आग्रह किया है कि उसको सताया न जाए। यह मदनलाल पाहवा उस षड्यंत्र का हिस्सा था, जिसने आखिरकार गांधीजी की हत्या को अंजाम दिया। २० जनवरी को मदनलाल ने विफल प्रयास किया था, दस दिन बाद ३० जनवरी को नाथुराम उस प्रयास में सफल रहा। किंतु मुझे विश्वास है, अगर गांधीजी अपनी मृत्यु से लौटकर बयान कर पाते तो नाथुराम को भी अपना भाई ही कहते। हत्यारे ने भी गोली दागने से पूर्व महात्मा के पैर यों ही नहीं छुए थे। अपनी हत्या का प्रयास करने वाले के प्रति भी द्वेष नहीं रखना, क्या यह आसान बात है? इसीलिए मैं कहता हूँ, गांधी होना कठिन है।

**सबसे अंत में, गांधी वाणी**

'सभी लोग करारों के खुद को अच्छे लगने वाले अर्थ निकालकर खुद को धोखा देते हैं। किसी शब्द का अपने अनुकूल पड़ने वाला अर्थ करने को न्यायशास्त्र में द्वि-अर्थी मध्यपद कहा गया है। सुवर्ण न्याय तो यह है कि विपक्ष ने हमारी बात का जो अर्थ माना हो, वही सच माना जाए। हमारे मन में जो हो वह खोटा अथवा अधूरा है। दूसरा सुवर्ण न्याय यह है कि जहाँ दो अर्थ हो सकते हैं, वहाँ दुर्बल पक्ष जो अर्थ करे, वही सच मानना चाहिए। इन दो सुवर्ण मार्गों का त्याग होने से ही अधर्म चलता है।

# वर्तमान दौर में गांधी की प्रासंगिकता

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता मोहनदास करमचंद गांधी के आदर्शों, विश्वासों एवं दर्शन से अद्‌भूत विचारों के संग्रह को गांधीवाद कहा जाता है।

**स्वराज**

गांधी का कहना था कि स्वराज्य एक पवित्र शब्द है, यह एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ आत्मशासन और आत्मसंयम है। अंग्रेजी शब्द इंडिपेंडेंस सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आजादी या स्वच्छंदता का अर्थ देता है, लेकिन स्वराज्य शब्द के अर्थ में ऐसा नहीं है। गांधी का स्वराज गाँवों में बसता था और वे गाँवों में गृह उद्योगों की दुर्दशा से चिंतित थे। खादी को प्रोत्साहन और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार उनके जीवन के आदर्श थे, जिनको आधार बनाकर उन्होंने देशभर के करोड़ों लोगों को आजादी की लड़ाई के साथ जोड़ा। उनका कहना था कि खादी का मूल उद्देश्य प्रत्येक गाँव को अपने भोजन एवं कपड़े के मामले में स्वावलंबी बनाना है।

**आर्थिक-सामाजिक व्यवस्था**

गांधी यह मानते थे कि आर्थिक व्यवस्था का व्यक्ति और समाज पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है और उससे उत्पन्न हुई आर्थिक और सामाजिक मान्यताएँ राजनीतिक व्यवस्था को जन्म देती है। उत्पादन की केंद्रित प्रणाली से केंद्रीभूत पूँजी उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप समाज के कुछ ही लोगों के हाथों में आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था केंद्रित हो जाती है। ऐसे में गांधी के समाज की रचना विकेंद्रीकरण पर आधारित मानी जा सकती है। गांधी के आर्थिक-सामाजिक दर्शन में विकेंद्रित उत्पादन के साधनों का विकेंद्रित होना और पूँजी विकेंद्रित होने की बात कही गई है, ताकि समाज जीवन के लिये आवश्यक पदार्थों की उपलब्धि में स्वावलंबी हो और उसे किसी का मुखापेक्षी न बनना पड़े।

**पंचायत और ग्रामीण अर्थव्यवस्था**

इस मुद्दे पर गांधी के विचार बहुत स्पष्ट थे। उनका कहना था कि यदि हिंदुस्तान के प्रत्येक गाँव में कभी पंचायती राज कायम हुआ, तो मैं अपनी इस तस्वीर की सच्चाई साबित कर सकूँगा, जिसमें सबसे पहला और सबसे आखिरी दोनों बराबर होंगे, अर्थात् न कोई पहला होगा और न आखिरी। इस बारे में उनका मानना था कि जब पंचायती राज स्थापित हो जाएगा तब लोकतंत्र ऐसे भी अनेक काम कर दिखाएगा, जो हिंसा कभी नहीं कर सकती।

गांधी भलीभाँति जानते थे कि भारत की वास्तविक आत्मा देश के गाँवों में बसती है। अतः जब तक गाँव विकसित नहीं होंगे, तब तक देश के वास्तविक विकास की कल्पना करना बेमानी है। गांधी के दर्शन में देश के आर्थिक आधार के लिये गाँवों को ही तैयार करने की कल्पना की गई है। गांधी का विचार था कि भारी कारखाने स्थापित करने के साथ-साथ दूसरा स्तर भी बचाए रखना जरूरी है जो कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था है।

**धर्म**

गांधी को समझने के लिये यह स्पष्टतः समझ लेना होगा कि गांधीवाद के नीचे धर्म की एक ठोस बुनियाद है, जिसके बारे में उनका मानना था कि इसके संस्कार उन्हें अपनी माता से मिले। गांधी ने अपने अखबार यंग इंडिया में लिखा था कि सार्वजनिक जीवन के आरंभ से ही उन्होंने जो कुछ कहा और किया है, उसके पीछे एक धार्मिक चेतना और धार्मिक उद्देश्य रहा है। राजनीतिक जीवन में भी उनके धार्मिक विचार उनके राजनीतिक आचरण के लिये पथ-प्रदर्शक बने रहे। वे स्वधर्म के साथ अन्य सभी धर्मों का समान आदर करते थे। उनका कहना था कि मेरा धर्म तो वह है जो मनुष्य के स्वभाव को ही बदल देता है... जो मनुष्य को उसके आंतरिक सत्य के अटूट संबंध में बाँध देता है.... और जो सदैव पाक-साफ करता है। गांधी के अनुसार धर्म सबसे प्रेम करना सिखाता है... न्याय तथा शांति की स्थापना के लिये खुद के बलिदान की प्रेरणा देता है। उनकी निगाह में धर्म निर्बल का बल तथा सबल का मार्गदर्शक है।

**स्वच्छता**

स्वच्छता एवं अस्पृश्यता गांधी दर्शन के केंद्र में हैं और इन पर उनके विचार स्पष्ट एवं पूर्णरूप से केंद्रित थे। जनसरोकारों से जुड़े अपने लगभग हर संबोधन में गांधी स्वच्छता के मामले को उठाते थे। उनका मानना था कि नगरपालिका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सफाई रखना है। जो कोई भी उनके आश्रम में रहने आता था, तो गांधी जी की पहली शर्त यह होती थी कि उसे आश्रम की सफाई का काम करना होगा, जिसमें शौच का वैज्ञानिक ढंग से निस्तारण करना भी शामिल था। गांधी का मानना था कि स्वच्छता ईश्वर भक्ति के बराबर है, इसलिये वे लोगों से स्वच्छता बनाए रखने को कहते थे। वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक

एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिये कार्य करें।

**अस्पृश्यता**

गांधी अस्पृश्यता या छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष को साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष से भी कहीं अधिक विकराल मानते थे। इसकी वजह यह थी कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में तो उन्हें बाहरी ताकतों से लड़ना था, लेकिन अस्पृश्यता से संघर्ष में उनकी लड़ाई अपनों से थी। वे कहते थे कि मेरा जीवन अस्पृश्यता उन्मूलन के लिये उसी प्रकार समर्पित है, जैसे अन्य बहुत सी बातों के लिये है। गांधी ने अस्पृश्यता को समाज का कलंक तथा घातक रोग माना, जो न केवल स्वयं को अपितु सम्पूर्ण समाज को नष्ट कर देता है। गांधी का कहना था कि इसी अस्पृश्यता के कारण हिंदू समाज पर कई संकट आए। वे कुछ हिंदुओं के इस तर्क से भी सहमत नहीं थे कि अस्पृश्यता हिंदू धर्म का एक अंग है जिसे समाप्त करना संभव नहीं है।

**सत्याग्रह**

उनके अनुसार एक सत्याग्रही सदैव सच्चा, अहिंसक व निडर रहता है। गांधी जी का सत्याग्रह सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित था। उनका कहना था कि किसी भी सत्याग्रही को सच्चा, अहिंसक व निडर होना चाहिये और उसमें बुराई के विरुद्ध संघर्ष करते समय सभी प्रकार की यातनाओं को सहने की शक्ति होनी चाहिये। ये यातनाएँ सत्य के प्रति उनकी आसक्ति का ही एक हिस्सा होती है।

गांधी सविनय अवज्ञा की बात करते हैं और वह भी पूर्णतः अहिंसक तरीके से। १९१५ में दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद १९१७ में बिहार के चंपारण में नील की खेती करने वाले किसानों के समर्थन में उनका पहला सत्याग्रह देखने को मिला। वहाँ तिनकठिया पद्धति के अंतर्गत अंग्रेज बागान मालिकों के लिये किसानों को अपनी भूमि के ३/२०वें हिस्से में नील की खेती करना अनिवार्य था। इसी के विरोध में गांधी ने अहिंसात्मक प्रतिरोध या सत्याग्रह या सविनय अवज्ञा (सत्याग्रह) का मार्ग चुना और सरकार को झुकने पर विवश किया।

**अहिंसा**

गांधी के अनुसार अहिंसा नैतिक जीवन जीने का मूलभूत तरीका है। यह सिर्फ आदर्श नहीं, बल्कि यह मानव जाति का प्राकृतिक नियम है। हिंसा से किसी समस्या का तात्कालिक और एकपक्षीय समाधान हो सकता है, किंतु स्थायी और सर्वस्वीकृत समाधान सिर्फ अहिंसा से ही संभव है। गांधी के चिंतन में हिंसक पशुओं, रोग के कीटाणुओं, फसलों की कीटों, असहनीय दर्द झेल रहे जीवों को मारने के लिये अहिंसा के नियम का उल्लंघन करने को उचित बताया गया है। गांधी का कहना था कि यदि हिंसा और कायरता में से एक को चुनना हो तो हिंसा को चुनना उचित है। अहिंसा को साधन बनाने वाले पहले व्यक्ति बेशक गांधी नहीं थे, लेकिन इसे आंदोलन का रूप देने वाले पहले व्यक्ति अवश्य थे, क्योंकि उन्होंने हिंसा का मनोविज्ञान समझ लिया था।

**शिक्षा**

गांधी ज्ञान आधारित शिक्षा के स्थान पर आचरण आधारित शिक्षा के समर्थक थे। उनका कहना था कि शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिये जो व्यक्ति को अच्छे-बुरे का ज्ञान प्रदान कर उसे नैतिक रूप से सबल बनाए। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिये उन्होंने वर्धा योजना में प्रथम सात वर्षों की शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य करने की बात कही थी। गांधी का यह भी मानना था कि व्यक्ति अपनी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा को अधिक रुचि तथा सहजता के साथ ग्रहण कर सकता है। अखिल भारतीय स्तर पर भाषायी एकीकरण के लिये वे कक्षा सात तक हिंदी भाषा में ही शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे।

**निष्कर्ष**

महात्मा गांधी २०वीं शताब्दी के दुनिया के सबसे बड़े राजनीतिक और आध्यात्मिक नेताओं में से एक माने जाते हैं। वे पूरी दुनिया में शांति, प्रेम, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, मौलिक शुद्धता और करुणा तथा इन उपकरणों के सफल प्रयोगकर्ता के रूप में याद किये जाते हैं। जिसके बल पर उन्होंने उपनिवेशवादी सरकार के खिलाफ पूरे देश को एकजुट कर आजादी की अलख जगाई। गांधी ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों का प्रयोग भारत को आजाद कराने में किया। उनका कहना था कि भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षाएँ रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिये जो कुछ चाहिये वह सब उसे भारत में मिल सकता है।

इसे विडंबना ही कहा जायेगा कि गांधी ने लगभग ३२ वर्षों तक आजादी की लड़ाई लड़ी, लेकिन आजाद भारत में वे केवल १६८ दिन ही जीवित रह पाए। आज दुनिया के किसी भी देश में जब कोई शांतिमार्च निकलता है या अत्याचार व हिंसा का विरोध किया जाता है या हिंसा का जवाब अहिंसा से दिया जाना हो, तो ऐसे सभी अवसरों पर पूरी दुनिया को गांधी याद आते हैं। अतः यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं कि गांधी के विचार, दर्शन तथा सिद्धांत कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा आने वाले समय में भी रहेंगे।

# बापू

**– पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया**

बापू! युग के अन्धकार में
तुम आशा की एक किरण हो।
पशुता की आँधी में कितने
बड़े-बड़े तरु टूट गिर गये,
क्या बिसात थी रज के कण की
नगपति अपनी दिशा फिर गये,
पर नन्ही-सी दीन दूब के, तुम भी जैसे जमे चरण हो।
नयन नीड़ में रहने वाली
करुणा का आवास छुट गया,
निष्ठुरता के विषम व्याल से
त्रस्त दया का विहग उड़ गया,
भीत काँपती मानवता के, एकमात्र अवलम्ब शरण हो।
आज शेष की फुंकारों से
तेरा अमर अशेष भिड़ गया,
आज अन्त का पुनः आदि से
घोर कठिन संग्राम छिड़ गया,
जग देखे फिर नये सिरे से, जीवन की जय विजित मरण हो।

बापू तुम आत्मा केवल!
पंच तत्त्व तो गौण
ज्यों बाती तल दीपक
कब डँस सकता ज्योति
अन्धकार का तक्षक
तुम ऐसे पन्थी, पथ ही जिसके चलने का सम्बल।
कब अनन्त रह सकता
बँध मिट्टी में सीमित!
मिट्टी स्वयं असीम
तुम से है सस्मित
है कोटि-कोटि प्राणों में बिखरा, तेरे प्राणों का मृदुबल।
भौतिकता युग वाद
किन्तु तुम युग से ऊपर
तुम अध्यात्म के शतदल
कब छूता कर्दममय सर?
नमस्कार शत बार, पिया जगहित शिव सम हालाहल।
बापू तुम आत्मा केवल!

# SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**

- **Radiology**

- MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
- Ultrasonography | - Colour Doppler Study

- **Cardiology**

- ECG | - Echo-Cardiography
- Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
- Treadmill Test (TMT)

- **Wide Range of Pathology**
- **Pulmonary Function Test**
- **UGI Endoscopy / Colonoscopy**
- **Physiotherapy**
- **EEC / EMG / NCV**
- **General & Cosmetic Dentistry**
- **Elder Care Service**
- **Sleep Study (PSG)**
- **EYE / ENT Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Haematolgy Clinic**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Health Check-up Packages**
- **Online Reporting**
- **Report Delivery**

## Home Blood Collection

## (033) 4021-2525, 97481-22475

## 98301 96659

**Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks**

S R RUNGTA GROUP
R
Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL™
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by
IS 1786:2008
Lic.No.-CM/L
5800021706
Approved by
IS 2830:2012
Lic.No.-CM/L
5800007712

# बापू की वक्तव्य शक्ति

**– राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी**

महात्मा गांधी के भाषण दुनिया के लिये राजमार्ग खोलनेवाले सिद्ध हुए। बनारस में उनके बोलने से सभापति कुर्सी छोड़ कर भाग गए और गांधीजी को अपना वक्तव्य समाप्त करना पड़ा। बात ४ फरवरी १९१६ की है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में लार्ड हार्डिंग ने शिलान्यास किया और उसके बाद सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हो गयी।

देश के प्रमुख राजा अपनी राजसी पोशाक और हीरे-जवाहरात के आभूषणों से सजे-सजाये बैठे थे, गवर्नर भी अलंकरणों से सुसज्जित थे। सेठ-साहूकार, जमीन्दार, तल्लुकेदार भी अपनी-अपनी शान के मुताबिक सुशोभित हो रहे थे। वकील, डॉक्टर भी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से अभी-अभी लौटे ही थे, दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन के कारण यहाँ उन्हें लोग जान तो गये थे किन्तु उनका भाषण लोगों ने सुना नहीं था। कई लोगों के द्वारा अंग्रेजी में दिये गये वक्तव्यों के बाद समारोह में गांधीजी से भी बोलने के लिये कहा गया। गांधीजी ने हिन्दी में बोलना प्रारंभ किया तो श्रीमती एनीबीसेंट ने उनसे कहा कि आप भी अंग्रेजी में ही बोलें, किन्तु गांधीजी ने उनकी ओर से मुँह फेर लिया और धारा-प्रवाह बोलने लगे –

'एक ओर तो आप भारत की गरीबी पर भी बोल रहे हैं तथा दूसरी ओर आप लोग इतने भव्य रत्नाभूषणों से सज कर आये हैं कि पेरिस से आया हुआ जौहरी भी चकित हो जायेगा। मैं कहता हूँ कि जब तक आप इन गहनों को उतार कर देशवासियों को अमानत के रूप में नहीं सौंप देंगे तब तक भारत का विस्तार नहीं हो सकता।'

विद्यार्थी तो ताली बजाने लगे और राजा लोग नाराज होकर सभा में से उठने लगे। गांधीजी कहे जा रहे थे - यह धन आया कहाँ से है, यह धन तो किसानों के पास से आया हुआ है। आप किसानों की मेहनत को इस प्रकार से छीन लेते हैं। यह भावना स्वराज के खिलाफ है...।

बार-बार टोके जाने पर भी गांधीजी बिना रुके बोले जा रहे थे - आप समझते हैं कि मैंने शिष्टाचार का उल्लंघन किया है तो मैं आपसे क्षमा माँग रहा हूँ लेकिन मुझे तो अपने दिल की ही बात कहनी है और वह तो कहूँगा। वायसराय बनारस में आये तो इतने जासूस तैनात किये गयें कि हम थर्रा गये हैं, यह अविश्वास क्यों? इससे तो अच्छा यही होता कि वायसराय हार्डिंग मर जाए। शक्तिशाली सम्राट का प्रतिनिधि इतना डरता है? वह तो जीते-जी डर से मर रहा है। आपने इतने जासूस हम पर थोपे कि भारत में इसकी प्रतिक्रिया में विप्लवकारी सेना पैदा हो गयी है और मैं स्वयं भी विप्लवी हूँ।

वह बोल रहे थे - हमें किसी से डरने की जरूरत नहीं है, न वायसराय से, न महाराजा से, न जासूसों से, न जज से क्योंकि हम ईश्वर में विश्वास करते हैं। तभी श्रीमती एनीबीसेंट ने चिल्ला कर कहा कि इसे बन्द कर दीजिये, इसे बन्द कर दीजिये। गांधीजी बोले जा रहे थे - यदि आप सोचती हैं कि मेरे बोलने से देश और साम्राज्य का हित-साधन नहीं हो रहा है, तो मैं बन्द कर दूँगा।

सभा चिल्लाने लगी - आप बोलते रहें, बोलते रहें। तभी सभापति महाराज-दरभंगा कुर्सी छोड़ कर भाग खड़े हुए। गांधीजी को भाषण बन्द करना पड़ा। लुई फिशर ने गांधीजी के इस भाषण का विस्तार से वर्णन किया है। महात्मा गांधी को समझने के लिए गहरी साधना की जरूरत है। संपूर्ण गांधी वाङ्मय को जाने बिना न हिन्दुत्व को जाना जा सकता है, न राष्ट्रीय-आन्दोलन को और न भारत को।

# शारीरिक व मानसिक रोगों की जनक है चिंता

आजकल विश्व की संभवतः सबसे प्रमुख व्यक्तिगत समस्या है 'चिंता'। प्रायः सभी स्त्री-पुरुष भली-भाँति जानते हैं कि चिंता करना हानिकारक है लेकिन फिर भी वे चिंतित रहते हैं। यह देखा गया है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक चिंताग्रस्त रहती हैं। कभी गृहस्थी की चिंता तो कभी रोटी की चिंता, कभी इसकी चिंता कभी उसकी, कभी गंभीर चिंता तो कभी सामान्य चिंता अर्थात् चिंता उन्हें किसी न किसी रूप में घेरे ही रहती है।

चिंता करना अत्यंत हानिकारक माना गया है। कहा भी गया है कि 'चिंता चिता समान'। चिंता हमारी शक्तियों का ह्रास करती है, विचारों को भ्रान्त बनाती है तथा स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है। जिस समय हम चिंता कर रहे होते हैं, उस समय हमारे सोचने समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है क्योंकि चिंता एकाग्रता को खत्म करती है। जब हम चिंतित रहते हैं तो हमारे विचार सर्वत्र भटकते रहते हैं और हम निर्णय करने की शक्ति से हाथ धो बैठते हैं।

अक्सर हमारी चिंताएँ किसी न किसी प्रकार की मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं से भरी होती हैं। हम अपना जीवन बहुत सी ऐसी बातों की चिंता में व्यतीत करते हैं जो वास्तव में कभी नहीं होती। यदि ध्यान से सोचें तो आपको स्मरण हो जाएगा कि अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना से पूर्व आपका मन कई दिनों या कई महीनों तक बेचैन रहा था जैसे परीक्षा परिणाम से पूर्व, किसी पद ग्रहण करने से पहले या फिर कोई महत्वपूर्ण कार्य करने से पहले। उस समय आपको यही आशंका घेरे रहती है कि कहीं आपका अनुमान गलत न हो जाये अथवा कहीं आप असफल न हो जाएँ।

उस समय उस आशंका, चिंता या भय के कारण आपका मन भारी-भारी रहता था। आप अपने को अस्वस्थ, अप्रकृत अनुभव करते थे किंतु उस समय आपने इस सत्य पर विचार नहीं किया कि वह आशंका का भूत आपके अपने ही मन की रचना थी। इस प्रकार अनेक महिलाएँ अपने ही मन की पैदा की हुई चिंताओं से कष्ट पाती रहती हैं और अपना जीवन बर्बाद कर लेती है। चिंता से मुक्त होने के कुछ उपाय जानिए।

- यदि आप चिंता से दूर रहना चाहते हैं तो आज की परिधि में रहिए। भविष्य की चिंता मत कीजिए। रोज नयी जिंदगी का श्रीगणेश कीजिए।
- स्मरण करिए कि 'आज' वही 'कल' है जिसकी आपने कल चिंता की थी।
- अनेक चिंताएँ समय बीतने पर स्वतः ही हल हो जाया करती हैं अतः चिंता करना व्यर्थ है।
- चिंता निवारण का एक सरल उपाय है व्यस्त रहा कीजिए ताकि चिंता का अवसर ही न मिले।
- चिंता एवं थकान रोकने के लिए काम करने में अपना उत्साह बढ़ायें व काम को उसके महत्व के अनुसार प्रधानता दीजिए।

- अपनी भूलों का लेखा रखिए एवं अपनी आलोचना स्वयं कीजिए। इससे चिंता दूर करने में मदद होगी।
- चिंता से दूर भागकर उससे बचा नहीं जा सकता पर उसके प्रति अपने मानसिक रवैये को बदलने से उसे दूर किया जा सकता है।

***चिंता करना अत्यंत हानिकारक माना गया है। कहा भी गया है कि 'चिंता चिता समान'। चिंता हमारी शक्तियों का ह्रास करती है, विचारों को भ्रान्त बनाती है तथा स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालती है। जिस समय हम चिंता कर रहे होते हैं...***

- आज किसी समस्या को लेकर आप चिंतित हैं। हो सकता है कि समय उसे अपने आप हल कर दे।
- अपनी कठिनाइयों को उनके सही रूप में देखने का प्रयास करें। जिस चिंता को हमने कुछ दिनों बाद भुला ही देना है तो उसे आज ही क्यों करें।
- कोई रोचक पुस्तक पढ़िये, उसमें इतना डूब जाइये कि चिंता खत्म हो जाए।
- चिंता से बचने के लिए उत्साह एवं स्फूर्ति के साथ जीवन बिताइए।
- तथ्यों का आकलन कीजिए। संसार में आधी चिंताएँ तो इसलिए होती हैं कि लोग अपने निर्णय के आधार को जाने बिना ही निर्णय लेने का प्रयास करते हैं।
- अपने मस्तिष्क में शान्ति, साहस, स्वास्थ्य और आशा के विचार रखिए। हमारा जीवन हमारे विचारों जैसा ही होता है।
- दूरस्थ तथा संदिग्ध कार्यों को छोड़ सन्निकट एवं निश्चित कार्यों को हाथ में लेना ही हमारा ध्येय होना चाहिए। इससे चिंता स्वतः ही खत्म होती है।
- कल पर विचार अवश्य कीजिए, उम्र पर मनन कीजिए, योजनाएँ बनाइए, तैयारी कीजिए किन्तु उसके लिए चिंतित मत होइए।
- यदि आपके पास समस्या पर निर्णय लेने के लिए आवश्यक तथ्य हों तो उसे वहीं, उसी समय हल कर लीजिए।

यदि आप उपरोक्त तथ्यों पर ध्यान देंगे तो अवश्य ही आपकी चिंताएँ समाप्त हो जाएंगी।

# देव-स्तुति

## [गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

**देवा ऊचुः**
**नैवं विदामो भगवन्नाणरोधं**
**चराचरस्याखिलसत्त्वधाम्नः।**
**विधेहि तन्नो वृजिनाद्विमोक्षं**
**प्राप्ता वयं त्वां शरणं शरण्यम्।।**

हे भगवान्, आप समस्त जड़ तथा चेतन जीवात्माओं के आश्रय हैं। हमें महसूस हो रहा है कि समस्त जीवों का दम घुट रहा है और उनकी श्वास प्रक्रियाएँ अवरुद्ध हो गई है। हमने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया है। आप समस्त शरणागतों के चरम आश्रय हैं, इसलिए हम आपके पास आये हैं। कृपया हमें इस संकट से उद्धार करें।

**ध्रुव उवाच**
**योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां**
**सञ्जीवयत्यखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना।**
**अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन्**
**प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्।।**

हे परमेश्वर, आप सर्वशक्तिमान हैं। मेरे अन्तःकरण में प्रवेश करके अपनी अन्तरंगा शक्ति से आपने मेरी सभी निश्चल इन्द्रियों को—हाथों, पाँवों, स्पर्शेन्द्रिय, प्राण तथा मेरी वाणी को पुनः जाग्रत कर दिया है। मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ।

**एकस्त्वमेव भगवन्निदमात्मशक्त्या**
**मायाख्ययोरुगुणया महदाद्यशेषम्।**
**सृष्ट्वानुविश्य पुरुषस्तदसद्गुणेषु**
**नानेव दारूषु विभावसुवद्विभासि।।**

हे भगवान्, आप सर्वश्रेष्ठ हैं, किन्तु आप आध्यात्मिक तथा भौतिक जगतों में अपनी विभिन्न शक्तियों के कारण भिन्न-भिन्न रूप से प्रकट होते हैं। आप अपनी बहिरंगा शक्ति से भौतिक जगत की समस्त शक्ति को उत्पन्न करके फिर उस भौतिक जगत में परमात्मा के रूप में प्रवेश कर जाते हैं। आप परम पुरुष हैं और क्षणिक गुणों से विभिन्न प्रकार की सृष्टि करते हैं, जैसे अग्नि विभिन्न आकार के काष्ठखंडों में प्रवेश कर विभिन्न रूपों में चमकती हुई जलती है।

**त्वद्दत्तया वयुनयेदमचष्ट विश्वं**
**सुप्तप्रबुद्ध इव नाथ भवत्प्रपन्नः।**
**तस्यापवर्ग्यशरणं तव पादमूलं**
**विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबन्धो।।**

हे प्रभु, ब्रह्मा पूर्ण रूप से आपके शरणागत हैं। आपके द्वारा प्रदत्त ज्ञान से वे समस्त ब्रह्मांड को उसी प्रकार देख और समझ पाये जिस प्रकार कोई मनुष्य नीद्रा से जगकर तुरन्त अपने कार्य समझने लगता है। आप मुक्ति के इच्छुक समस्त पुरुषों के एकमात्र आश्रय हैं और आप समस्त दीन-दुखियों के मित्र हैं। इसलिए पूर्ण ज्ञान से युक्त विद्वान पुरुष आपको किस प्रकार भुला सकता है?

**या निर्वृतिस्तनुभृतां तव पादपद्म –**
**ध्यानाद्भवज्जनकथाश्रवणेन वा स्यात्।**
**सा ब्रह्मणि स्वमहिमन्यपि नाथ मा भूत्**
**किं त्वन्तकासिलुलितात्पततां विमानात्।।**

हे भगवान्, आपके चरणकमलों के ध्यान से अथवा आपके अन्तरंगी भक्तों से आपकी महिमा का श्रवण करने से जो दिव्य आनन्द प्राप्त होता है, वह उस ब्रह्मानन्द अवस्था से कहीं बढ़कर है, जिसमें मनुष्य अपने आपको निर्गुण ब्रह्म से तदाकार हुआ सोचता है। चूँकि ब्रह्मानन्द भी भक्तिपूर्ण सेवा से प्राप्त दिव्य आनन्द से परास्त हो जाता है, इसलिए उस क्षणिक आनन्दमयता का क्या कहना, जिसमें कोई स्वर्ग तक पहुँच जाये और जो मृत्यु की तलवार के द्वारा विनष्ट हो जाता है, भले ही कोई स्वर्ग तक क्यों न उठ जाये, वह कालक्रम में नीचे गिर जाता है।

**भक्तिं मुहुः प्रवहतां त्वयि मे प्रसङ्गो**
**भूयादनन्त महताममलाशयानाम्।**
**येनाञ्ज सोल्बणमुरूव्यसनं भवाधब्धं**
**नेष्ये भवद्गुणकथामृतपानमतः।।**

हे अनन्त भगवान्, कृपया मुझे आशीर्वाद दें जिससे मैं उन महान् भक्तों की अन्तरंग संगति कर सकूँ जो आपकी दिव्य प्रेम भक्ति में उसी प्रकार निरन्तर लगे रहते हैं जिस प्रकार नदी की तरंगें लगातार बहती रहती हैं। ऐसे महान् भक्त भौतिक कल्मष से रहित जीवन निर्वाह करते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भक्तियोग से मैं इस संसार रूपी अज्ञान के महासागर को पार करने में सक्षम हूँगा जिसमें अग्नि की लपटों के सदृश भयंकर संकटों की लहरें उठ रही हैं। यह मेरे लिए सरल रहेगा, क्योंकि मैं आपके दिव्य गुणों तथा लीलाओं को श्रवण करने के लिए पागल हो रहा हूँ, जिनका अस्तित्व शाश्वत है।

**ते न स्मरन्त्यतितरां प्रियमीश मर्त्यं**
**ये चान्वदः सुतसुहृद्गृहवित्तदाराः।**
**ये त्वब्जनाभ भवदीयपदारविन्द–**
**सौगन्ध्यलुब्धहृदयेषु कृतप्रसङ्गाः।।**

हे कमलनाभ भगवान्, यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे भक्त की संगति करता है, जिसका हृदय सर्वदा आपके चरणकमलों की सुगन्ध में आकृष्ट रहता है, तो वह न तो कभी अपने भौतिक शरीर के प्रति आसक्त रहता है और न पुत्र, मित्र, घर, सम्पत्ति तथा पत्नी के प्रति देहात्मबुद्धि रखता है, जो भौतिकतावादी व्यक्तियों को अत्यन्त ही प्रिय हैं। वास्तव में, वह उनकी परवाह नहीं करता।

# सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

## आजीवन सदस्य

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **श्री बिलास राय अग्रवाल**<br>ब्राह्मणपाड़ा<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री दीपक कुमार अग्रवाल**<br>मे. अग्रवाल ज्वेलर्स<br>हॉस्पिटल रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री धीरज कुमार अग्रवाल**<br>कलिंगा सीमेंट<br>मेन रोड, सुंदरगढ़,<br>ओडिशा | **श्री दिनेश कुमार अग्रवाल**<br>हॉस्पिटल रोड, सुंदरगढ़,<br>ओडिशा | **श्री दिनेश कुमार अग्रवाल**<br>मोहंतीपाड़ा<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री दिपेन अग्रवाल**<br>मेन रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री सजन कुमार अग्रवाल**<br>जगन्नाथ टेम्पल कॉम्पलेक्स<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री चिराग अग्रवाल**<br>३३/एफ, बीजेबी नगर<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री राणा पृथ्वीराज सिंह**<br>४०७, विवेकानंद विहार,<br>ओल्ड टाउन<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री दिलीप धवालिया**<br>नजदीक चाइना टाउन<br>बीरमित्रापुर, सुंदरगढ़<br>ओडिशा |
| **श्री गोविंद कुमार अग्रवाल**<br>मे. भारत स्टोर<br>मेन रोड, सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री संजय कुमार अग्रवाल**<br>राजबाड़ी चौक<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री दिनेश कुमार केडिया**<br>२३१, वैष्णवी ब्लॉक,<br>बालाजी कॉम्पलेक्स,<br>झारपाड़ा, भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री रूपनारायण अग्रवाल**<br>एन२/६२, आईआरसी<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री गोपाल मित्तल**<br>नजदीक कॉन्ट्रेक्टरपाड़ा<br>बीरमित्रापुर,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री हरिनारायण अग्रवाल**<br>मिशन रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री शंकर लाल अग्रवाल**<br>मे. जगन्नाथ ट्रेडर्स<br>निरंजन नगर, रंगाधीप<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री गौरव अग्रवाल**<br>८२/ए, बापुजी नगर<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री संतोष अग्रवाल**<br>नजदीक आन्ध्रा बैंक<br>३०१, विश्वनाथ प्लाजा<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री नथमल धवालिया**<br>मे. अंकित मेडिकल स्टोर<br>गोल बाजार, बीरमित्रापुर,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री कन्हैयालाल अग्रवाल**<br>मे. जय मातादी टेक्सटाइल<br>रीजेंट मार्केट, मेन रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री सुभाष अग्रवाल**<br>भिटियापाड़ा<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री गौरव लाल**<br>प्लॉट नं. १६, जयदुर्गा<br>नगर, कटक रोड<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री सतीश कुमार गुप्ता**<br>एजुल एवेन्यू अपार्टमेंट<br>ब्लॉक-बी, प्लौट-१२०/१२१,<br>अटाला रोड, भुवनेश्वर,<br>खोर्दा, ओडिशा | **श्री पवन कुमार अग्रवाल**<br>नजदीक धर्मशाला<br>बीरमित्रापुर,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री कन्हैयालाल अग्रवाल**<br>मे. शुभ ट्रेडर्स<br>महादेवपाड़ा रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री सूरज अग्रवाल**<br>रीजेंट मार्केट, मेन रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री हरिप्रसाद भारती**<br>ए/३११, केशरी इन्क्लेव,<br>नुआसाही, नयापल्ली<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री सत्यनारायण शर्मा**<br>भुवनेश्वर,<br>खोर्दा, ओडिशा | **श्री शंभु अग्रवाल**<br>बीरमित्रापुर,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री मुकेश कुमार अग्रवाल**<br>मे. अग्रवाल हार्डवेयर<br>मेन रोड<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री उमेश पोद्दार**<br>निरंजन नगर, रंगाधीप<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता**<br>प्लॉट नं. ११८९पी,<br>बोमीखोल, गोविंद विहार<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री सौरभ केजरीवाल**<br>भुवनेश्वर,<br>खोर्दा, ओडिशा | **श्री सुनील कुमार गर्ग**<br>गोल बाजार<br>बीरमित्रापुर,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा |
| **श्री नीरज कुमार अग्रवाल**<br>निरंजन नगर, रंगाधीप<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री विकास अग्रवाल**<br>राजबाड़ी चौक<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल**<br>हाऊस नं. ३४, आर्यपल्ली<br>केआईआईटी रोड, पटिया<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री विनय गुप्ता**<br>थर्ड फ्लोर, सुदर्शन टावर<br>शहीद नगर<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री कमल कुमार गोयल**<br>मेन रोड, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |
| **श्री पवन अग्रवाल**<br>नजदीक बसंत बगीचा<br>सुनारीपाड़ा,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री घासीराम अग्रवाल**<br>महावीरपाड़ा, जयपटना,<br>कालाहांडी ओडिशा | **श्री महेश अग्रवाल**<br>आईआरसी विलेज,<br>नयापल्ली<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री विनोद जैन**<br>ए/४१०, केशरी इन्क्लेव<br>नुआसाही, नयापल्ली<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री मधुसूदन अग्रवाल**<br>क्वार्टर नं. सी/१३ हिल टॉप<br>कॉलनि, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |
| **श्री रविन्द्र अग्रवाल**<br>भिटियापाड़ा<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री आलोक सराफ**<br>१/१२, वनंजा अपार्टमेंट<br>युनिट-६, गंगानगर,<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री महेश कुमार शर्मा**<br>लक्ष्मीसागर स्क्वेअर,<br>कटक रोड,<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री योगेश सरावगी**<br>फ्लैट नं.०१, रश्मी<br>इन्क्लेव, बुद्धेश्वरी कॉलनी<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री नंदकिशोर अग्रवाल**<br>लम्तीबहल, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |
| **श्री राजेश अग्रवाल**<br>मोहंतीपाड़ा<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री आनंद अग्रवाल**<br>७२३, विष्णु-बी, बालाजी<br>कॉम्पलेक्स, झारपाड़ा<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री मोहित कानोड़िया**<br>प्लॉट नं. ७३, वीआईपी<br>कॉलनि, नयापल्ली<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री चंदा अग्रवाल**<br>बादल एसटीडी बूथ<br>बीरमित्रापुर, सुंदरगढ़,<br>ओडिशा | **श्री प्रमोद अग्रवाल**<br>लम्तीबहल, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |
| **श्री राजेश कुमार अग्रवाल**<br>मे. चाँदनी मेटल वर्क्स<br>मेन रोड,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री अभिषेक पोद्दार**<br>एन१/८७, आई आरसी<br>विलेज, नयापल्ली<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री नंदकिशोर अग्रवाल**<br>फ्लैट नं.१, रश्मी इन्क्लेव,<br>बुद्धेश्वरी, कॉलनि<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री अजय कुमार मित्तल**<br>नजदीक पोस्ट ऑफिस<br>बीरमित्रापुर, सुंदरगढ़<br>ओडिशा | **श्री राजेश कुमार अग्रवाल**<br>मेन रोड, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |
| **श्री रोहन अग्रवाल**<br>मे. अग्रवाल ज्वेलर्स<br>हॉस्पिटल रोड,<br>सुंदरगढ़, ओडिशा | **श्री भारत भूषण अग्रवाल**<br>३०१, रत्ना टावर,<br>कटक रोड,<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री नरेश अग्रवाल**<br>एन१/६५, आईआरसी<br>विलेज, नयापल्ली,<br>भुवनेश्वर, खोर्दा, ओडिशा | **श्री अशोक सिंघल**<br>नजदीक रंगोली फैशन<br>बीरमित्रापुर, सुंदरगढ़<br>ओडिशा | **श्री राजेश कुमार शर्मा**<br>सुशीला कम्युनिकेशन<br>लम्तीबहल, ब्रजराज नगर,<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा |

# सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

## आजीवन सदस्य

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **श्री संतोष मिश्रा**<br>मेन मार्केट, ब्रजराजनगर<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा | **श्री ललित कुमार गुप्ता**<br>नाहका, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री अतुल अग्रवाल**<br>सुबनपुरिया बिल्डिंग<br>खेतराजपुर, सम्बलपुर,<br>ओडिशा | **श्री राकेश पंसारी**<br>बालमुकुंद लेन, जालान गली<br>खेतराजपुर, सम्बलपुर,<br>ओडिशा | **श्री प्रकाश कुमार जैन**<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा |
| **श्री सतीश अग्रवाल**<br>मेन रोड, ब्रजराजनगर<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा | **श्री महेश मतानिया**<br>होटल नारायणी रिजॉर्ट<br>बस स्टैण्ड, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री बिनोद कुमार अग्रवाल**<br>बंगला नं. बी-७,<br>सरस्वती इन्क्लेव<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री संतोष कुमार भालोटिया**<br>पोद्दार कॉलोनि, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री प्रमोद कुमार जैन**<br>नज़दीक पुलिस स्टेशन<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा |
| **श्री सीताराम सितानी**<br>बाबा मंदिर, लम्तीबहल<br>ब्रजराजनगर<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा | **श्री नरेश कुमार गोयल**<br>बैंक स्ट्रीट, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री चंदन कुमार सहारिया**<br>बराईपल्ली रोड,<br>खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री शेखर अग्रवाल**<br>श्याम वाटिका, ब्लॉक सी<br>फ्लैट-२०४, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री रमेश जैन**<br>के. मंगल जैन<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा |
| **श्री सोहन शर्मा**<br>मेन रोड, ब्रजराजनगर<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा | **श्री पंकज अग्रवाल**<br>होटल पंकज, मेन रोड<br>जाजपुर रोड, जाजपुर,<br>ओडिशा | **श्री दीपक अग्रवाल**<br>चिराग सेल्स<br>फार्म रोड, मोदीपाड़ा<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री ताराचंद अग्रवाल**<br>खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री रोशन जैन**<br>मेन रोड, सिंधेकला,<br>बलांगीर, ओडिशा |
| **श्री सुनील कुमार सितानी**<br>लम्तीबहल, ब्रजराजनगर<br>झारसुगुड़ा, ओडिशा | **श्री राकेश गुप्ता**<br>मे. पी.के. राइस मिल<br>जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री महेश कुमार अग्रवाल**<br>दलाईपाड़ा<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री अभिनंदन जैन**<br>मेन रोड, सिंधेकला,<br>बलांगीर, ओडिशा | **श्री सुभाष जैन**<br>जगदीश क्लॉथ स्टोर<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा |
| **श्रीमती बबीता मतानिया**<br>मे. बापू पुआ साड़ी हाउस<br>जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री श्यामलाल बजाज**<br>मे. बजाज मार्बल, धवलगिरि<br>जाजपुर रोड, जाजपुर,<br>ओडिशा | **श्री महेश कुमार अग्रवाल**<br>सुबनपुर, पो.- अमकुनी<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री बाबुलाल जैन**<br>सिंधेकला, बलांगीर<br>ओडिशा | **श्री सुदर्शन जैन**<br>मे. अरहम इलेक्ट्रोनिक्स<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा |
| **श्रीमती पूनम गुप्ता**<br>मे. पी.के. राइस मिल<br>जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री सुरेश कुमार अग्रवाल**<br>न्यू बस स्टैण्ड,<br>जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री माँगेराम नाई**<br>तिवारीगली, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री बिमल कुमार जैन**<br>के. करम चंद जैन<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा | **श्री बजरंग अग्रवाल**<br>तर्भा, सुबर्णपुर<br>ओडिशा |
| **श्रीमती रेखा देवी गुप्ता**<br>नाहका, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री गायत्री ओझा**<br>तिवारीगली, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री मनीष मुरारका**<br>मुरारका बिल्डिंग,<br>खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री दिनेश कुमार जैन**<br>प्रेस रिपोर्टर, सिंधेकला<br>बलांगीर, ओडिशा | **श्री कैलाश चंद्र अग्रवाल**<br>तर्भा, सुबर्णपुर<br>ओडिशा |
| **श्री अनिल कुमार गुप्ता**<br>नाहका, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री सुषमा ओझा**<br>तिवारीगली,<br>खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री मुकेश पंसारी**<br>बालमुकुंद लेन, जालानगली<br>खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री गोपाल जैन**<br>मे. गोपाल साइकिल स्टोर<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा | **श्री कृष्णा कुमार अग्रवाल**<br>तर्भा, सुबर्णपुर<br>ओडिशा |
| **श्री अशोक कुमार अग्रवाल**<br>बजरंगबली एंटरप्राइजेज<br>बैंक स्ट्रीट, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री अजय अग्रवाल**<br>जालान रोड, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री नारायण अग्रवाल**<br>गोशाला, कलामती<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री जगन्नाथ जैन**<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा | **श्री शंकरलाल अग्रवाल**<br>तर्भा, सुबर्णपुर<br>ओडिशा |
| **श्री बालमुकुंद गुप्ता**<br>मे. पी.के. राइस मिल<br>जाजपुर रोड,<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री अनिल कुमार श्रीरामका**<br>नोआपाड़ा, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री नवीन पंसारी**<br>बालमुकुंद लेन, जालान<br>गली, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री मानिक चंद जैन**<br>छकिल दास जैन<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा | **श्री शिव कुमार अग्रवाल**<br>तर्भा, सुबर्णपुर<br>ओडिशा |
| **श्री जगदीश प्रसाद मतानिया**<br>मे. बापू पुआ साड़ी हाउस<br>बस स्टैण्ड, जाजपुर रोड<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री अरुण कुमार पोद्दार**<br>पोद्दार हाउस, स्ट्रीट नं.३,<br>पोद्दार कॉलनि, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री राजेश अग्रवाल**<br>एन गुहा लेन, फाटक<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री मनोज कुमार अग्रवाल**<br>सिंधेकला, बलांगीर,<br>ओडिशा | **श्री मनीषा जैन**<br>मे. नीलम इण्डस्ट्रीज<br>रेंगाली कैम्प,<br>बरगढ़, ओडिशा |
| **श्री कैलाश कुमार लाखोटिया**<br>शर्मा पेट्रोल पंप के सामने<br>पानी कोईली<br>जाजपुर, ओडिशा | **श्री आशीष राम नाई**<br>तिवारीगली, खेतराजपुर<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री राजीव कुमार जैन**<br>खेतराजपुर, एसबीआई<br>के सामने, अग्रसेन मार्ग,<br>सम्बलपुर, ओडिशा | **श्री प्रवीण कुमार जैन**<br>मे. नमन कलेक्शन,<br>नज़दीक अग्रवाल जैनभवन,<br>सिंधेकला, बलांगीर, ओडिशा | **श्रीमती श्रद्धा जैन**<br>के. हेमंत कुमार जैन<br>रेंगाली कैम्प,<br>बरगढ़, ओडिशा |

# सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

## आजीवन सदस्य

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **श्री अमित कुमार जैन**<br>मे. नीलम इण्डस्ट्रीज<br>रेंगाली कैम्प, बरगढ़,<br>ओडिशा | **श्री अंकित कुमार जैन**<br>मे. नीलम इण्डस्ट्रीज<br>रेंगाली कैम्प, बरगढ़,<br>ओडिशा | **श्री हेमन्त कुमार जैन**<br>मे. जय बालाजी ट्रेडर्स<br>रेंगाली कैम्प, अटाबिरा,<br>बरगढ़, ओडिशा | **श्री मनोज शर्मा**<br>मे. धनतेश्वरी राइस मिल्स<br>भुरसीरपल्ली, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती कुसुम मोर**<br>मे. कचहरी रोड, बालासोर,<br>ओडिशा |
| **श्रीमती निलिमा राठी**<br>मे. माहेश्वरी मार्केटिंग<br>बी.सी. सेन रोड,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्रीमती निर्मला शारदा**<br>मे. सिद्धेश्वरी कालोनी<br>रेमुना गोलेई, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती रामकला पेरीवाल**<br>मे. श्री रामजी ट्रेवल्स<br>बस स्टैंड, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती रिमा जालान**<br>मे. अभिषेक एंटरप्राइजेज,<br>ओ.टी. रोड, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती सीमा महावार**<br>मे. शिवचरण सीताराम<br>मोतीगंज बाजार, बालासोर,<br>ओडिशा |
| **श्रीमती सीमा मूँधड़ा**<br>सहदेवकुंठा, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती सोनिया पेरीवाल**<br>मे. श्री रामजी बस<br>नजदीक बस स्टेंड,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्रीमती सुनीता राठी**<br>सहदेवकुंठा, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्रीमती स्वेता सोमानी**<br>मे. एस.एन.एम. इण्डस्ट्रीज<br>प्रा. लिमिटेड, बानपरिया,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्रीमती वीना भूतड़ा**<br>मे. हीरा टेक्सटाईल्स,<br>निलियाबाग, बालासोर,<br>ओडिशा |
| **श्री अमित गुप्ता**<br>अर्तकविराज रोड, मोतीगंज,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री अनिल कुमार गुप्ता**<br>बसता, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री विनोद पेरीवाल**<br>मे. श्री रामजी ट्रैवल्स<br>बस स्टैंड, बालासोर, ओडिशा | **श्री दीप प्रकाश पेरीवाल**<br>नजदीक झादेश्वर मंदिर<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री दिनेश कारानी**<br>मे. कारानी एजेंसी, जिला<br>स्कूल के सामने, जेल<br>रोड, बालासोर, ओडिशा |
| **श्री घनश्याम काबड़ा**<br>मे. मकराना मार्बल्स, आई.<br>जी. मार्ग, आई.टी.आई<br>चौक, बालासोर, ओडिशा | **श्री घनश्याम कारानी**<br>मे. स्वास्तिक ट्रेडिंग कंपनी,<br>मोतीगंज, बालासोर, ओडिशा | **श्री गिरधारी गुप्ता**<br>बस्ता, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री गोविन्द कुमार राठी**<br>मे. राठी ब्रदर्स, नया<br>बाजार, बालासोर, ओडिशा | **श्री गौरी शंकर बहेती**<br>मे. संजय हाईट, प्रुफ<br>रोड, बालासोर, ओडिशा |
| **श्री योगेश प्रसाद गुप्ता**<br>महादेवसराय, बस्ता,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री किशोर गोपाल शारदा**<br>मे. सिद्धेश्वरी कॉलनि, रेमुना<br>गोलई, बालासोर, ओडिशा | **श्री महेश राठी**<br>मे. इंदिरा एजेंसी, विवेकानन्द<br>मार्ग, बालासोर, ओडिशा | **श्री मनोहर पेरीवाल**<br>मे. श्रीजी एंटरप्राइजेज,<br>बी.एन. मार्ग, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री मनोज बागरी**<br>मे. आनंद प्लास्टिक, नया<br>बाजार, बालासोर, ओडिशा |
| **श्री मोहन लाल गुप्ता**<br>महादेवसराय, बस्ता,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री मोहित अग्रवाल**<br>मे. श्रीराम एंटरप्राइजेज<br>सहदेवकुंठा, बस स्टैंड,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री नवरत्न सिखवाल**<br>बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री नवीन कुमार चांडक**<br>मे. नीलम रबर, रेमुना गोलई<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री नवरत्न राठी**<br>मे. माहेश्वरी मार्केटिंग,<br>बी.सी. सेन रोड,<br>बालासोर, ओडिशा |
| **श्री नीरज पोद्दार**<br>मे. पोद्दार डिस्ट्रीब्युटर्स<br>बटेश्वर रोड, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री पंकज पेरीवाल**<br>मे. पलक परी, बी.एन.<br>मार्ग, बालासोर, ओडिशा | **श्री प्रदीप निगानिया**<br>मे. दुर्गाश्री, अर्तकविराज रोड,<br>मोतीगंज, बालासोर, ओडिशा | **श्री प्रमोद नन्द मिश्रा**<br>मे. एस. खटुआ, कांग्रेस<br>ऑफिस लेन, मोतीगंज,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री राज कुमार भट्टर**<br>मे. बी.आर. इण्डस्ट्रीज,<br>बाईसिंगा, बालासोर, ओडिशा |
| **श्री राजेन्द्रा भूतड़ा**<br>मे. हीरा टेक्सटाईल्स,<br>निलियाबाग, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री राजेश पेरीवाल**<br>मे. श्री रामजी ट्रैवल्स, बस<br>स्टैंड, बालासोर, ओडिशा | **श्री संजय सोमानी**<br>मे. एस.एम. इण्डस्ट्रीज<br>प्रा. लि., बानपरिया,<br>बालासोर, ओडिशा | **श्री सुरेश कुमार बंसल**<br>मे. कृष्णा विहार, रेमुना<br>गोलई, बालासोर, ओडिशा | **श्री विजय कुमार भूतड़ा**<br>मे. एपल टावर रूम नं-<br>२०२, बी.आई.पी कॉलनि,<br>बालासोर, ओडिशा |
| **श्री भिलेश कुमार जैन**<br>नजदीक मंगल मंदिर,<br>राधारानीपाड़ा, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री प्रेम लाल अग्रवाल**<br>मे. रॉयल रेसीडेंसी,<br>मधियापल्ली, बालासोर,<br>ओडिशा | **श्री असहिकी गोयल**<br>मे. राधिका मेडिकल स्टोर<br>मेन मार्केट, देवघर, ओडिशा | **श्रीमती बर्षा मित्तल**<br>मे. एस.एन.स्टील एण्ड<br>मार्बल्स, बल्लाम, बाजार<br>शाही, देवघर, ओडिशा | **श्रीमती डिम्पल अग्रवाल**<br>मेन रोड, कानधल, देवघर,<br>ओडिशा |
| **श्री पुष्पा बाई अग्रवाल**<br>मे. अग्रवाल एंटरप्राइजेज,<br>कॉलेज रोड, देवघर,<br>ओडिशा | **श्री अरुण कुमार गोयल**<br>मेन मार्केट, देवघर,<br>ओडिशा | **श्री अरुण कुमार जिंदल**<br>काल्ला, देवघर,<br>ओडिशा | **श्री भजन लाल गुप्ता**<br>शासनशाही, देवघर,<br>ओडिशा | **श्री विकाश चन्द्र अग्रवाल**<br>कॉलेज रोड, देवघर,<br>ओडिशा |
| **श्री गोपाल चन्द्र अग्रवाल**<br>मे. भाई-भाई लूगा दुकान,<br>देवघर, ओडिशा | **श्री गोविन्द राम अग्रवाल**<br>मेन रोड, कानघल,<br>देवघर, ओडिशा | **श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल**<br>मे. अग्रवाल एंटरप्राइजेज,<br>कॉलेज रोड, देवघर,<br>ओडिशा | **श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल**<br>मे. श्री किशन सप्लायर्स<br>देवघर, ओडिशा | **श्री कमल किशोर गुप्ता**<br>शासनशाही, थाना रोड,<br>देवघर, ओडिशा |
| **श्री कन्हाईलाल अग्रवाल**<br>मे. कान्हा किराना स्टोर,<br>देवघर डेली मार्केट,<br>देवघर, ओडिशा | **श्री किशन कुमार अग्रवाल**<br>मे. शुभलक्ष्मी होंडा<br>देवघर, ओडिशा | **श्री कुलदीप जिंदल**<br>नजदीक बी.ए.जी.बी बैंक<br>काल्ला, देवघर, ओडिशा | **श्री ललित मित्तल**<br>देवघर डेली मार्केट,<br>देवघर, ओडिशा | **श्री मनोज कुमार अग्रवाल**<br>कॉलेज रोड, देवघर,<br>ओडिशा |

# To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2018-2020
Date of Publication - 31st October 2020
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com